5 साल बेमिसाल
सामाजिक गतिविधियों का लेखा जोखा
सबसे पहले सबसे तेज

मासिक
कुमावत इंडिया
कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com
Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-6 | अंक-4 | नवम्बर-2022 | पृष्ठ-32 | मूल्य : ₹ 20.00

दुनिया की सबसे बड़ी
शिव प्रतिमा
नाथद्वारा, राजस्थान
369 फीट ऊंची
20 किमी दुर से दिखती है

मूर्तिकार
विश्वास स्वरूपम्
नरेश कुमावत

Tanuj Kumawat
M. 9829017584
M. 9079116881

C.K. Handicrafts

Wholesaler and Exporters of Indian Handicrafts. We deal in all kinds of wooden handicraft statues, Gift items and Religious idols. Crafted by Artisans in Jaipur Rajasthan of Handmade Work with generation of experience in wooden carving.

हैण्डीक्राफ्ट कारीगरों (हस्तशिल्पियों) द्वारा निर्मित नवीन उत्पादों को मार्केट
और आत्मनिर्भर भारत के लिए कदम बढ़ाते हुए ''वोकल फॉर लोकल'' के उद्देश्य से

हस्तशिल्प प्रोत्साहन सप्ताह

में

आप सादर आमंत्रित हैं

(28 नवम्बर 22 से 5 दिसम्बर 22 तक)
समय प्रतिदिन प्रात: 9 से 12 बजे तक

आत्मनिर्भर भारत के लिए बढ़ते कदम...

अधिक जानकारी के लिए : प्रात: 9 से 12 बजे तक मोबाइल नं. 9829017584 पर सम्पर्क कर सकते हैं

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

मुख्य संरक्षक	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	मो. 9414994006
अध्यक्ष	:	रमेश कुमावत (गेदर)	मो. 9414554322
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	मो. 9887440666
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	मो. 9414810584
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	मो. 9549656438
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	मो. 9829056063
		हेमचन्द खड़गटा	मो. 9351682036
		रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	मो. 9414074376
		जयकिशन सोकिल	मो. 9829125428
		चेतन बालोदिया	मो. 9414052736
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	मो. 9414263429

सम्पादक मण्डल : रामप्रकाश कुमावत (मारवाल) सम्पादक - 9414074376, जयसिंह गुड़ीवाल सह-सम्पादक 9461343432, गौरव अजमेरा 9829488824, प्रमोद कुण्डलवाल 9414362169, मनीष कुमावत 9660702083 **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, श्रीमती राजबाला बिर्थला 7976475370, प्रभुदयाल तुनगरिया किशनगढ़ 9680931428, अशोक कुमावत - 9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया तथा मुकेश कारगवाल 9828606056 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397** **दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580** **सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444** **वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299** **मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188** **जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301** **कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402** **सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657** **उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687** दयाशंकर रावड़िया **मो. 9414391034** **ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493** **किशनगढ़ :** नन्दकिशोर पारमवाल **मो. 9667090499** **बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957** **सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812** **इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645**

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-600

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर सूचित अवश्य करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित सम्पादक राम प्रकाश कुमावत (मारवाल)

सम्पादकीय

आज विज्ञान ने शरीर के बाबत सिद्ध कर दिया है कि लगभग 60 लाख वर्षों की लंबी प्रक्रिया के बाद पशु का शरीर विकसित होकर मनुष्य तक पहुंचा है। यह विकास क्रम यही पर समाप्त नहीं होता है। आज संसार में सुखी और समृद्ध बनाने वाले साधन-रत्न पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। हमें सर्वप्रथम प्रकृति के नियम के द्वारा शरीर को समझना होगा। प्रकृति ने हमारे शरीर के साथ मन और चेतना को भी विकसित किया है और इन तीनों के कुछ प्राकृतिक नियम होते हैं। जो इन नियमों को समझ लेता है, वह मनुष्यता की और अग्रसर होता जाता है। इस दिशा में पहला कदम है अपने लक्ष्य का स्पष्ट बोध होना, इसके बिना कोई भी प्रयास निरर्थक ही होगा। आज हर तरफ लोगों की भागती भीड़ हैं अर्थात कुछ हासिल करने के लिए अथाह प्रयास करना और आश्चर्य की बात यह है कि पैसा, नाम और पद के पीछे भाग रही इस भीड़ के पास साधन तो बहुत है फिर भी यह अंतहीन दौड़ जारी है फिर भी तृप्ति नहीं मिल रही है। क्योंकि उसकी निश्चित दिशा नहीं है। एक संतुलित और सुनिश्चित लक्ष्य वाले मनुष्य के पास यह सभी साधन उपलब्ध हो जाते हैं लेकिन सामान्य आदमी को जीवन भर इनके पीछे भागना पड़ता है। क्योंकि उसके पास 'ज्ञान' नहीं था। जिसके पास 'ज्ञान' होता है पूरी दुनियां उस की मुट्ठी में होती है। यह ज्ञान हमारे ब्रेन में पैदा होता है इसकी शक्तियों को पूर्णतया जाग्रत करना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। जिसने अपने ब्रेन की शक्तियों को पूर्ण रूप से जगा लिया है वह बाहर से जनक की तरह और भीतर से बुद्ध की तरह शांत हो जाता है। अपने लक्ष्य को सही दिशा में नहीं लगाएंगे तो जीवन में तनाव, बेचैनी और खालीपन बढ़ने लगेगा और अंतत: कहीं नहीं पहुंच पाएंगे। ब्रेन की शक्तियों को जगाने के 8 प्राकृतिक नियम होते हैं इन्हें विस्तार से समझने के लिए एक लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है किंतु सूक्ष्म रूप से समझना जरूरी है। पहला चरण 'यम' जिसका अर्थ है कि स्वयं के जीवन को सम्यक दिशा देना। दूसरा चरण है 'नियम' यानी जीवन को नियमितता में अनुशासन में लाना अर्थात प्रकृति अनुरूप सोना, जागना और कार्य करना। तीसरा चरण है 'आसन' अर्थात आहार एवं प्रकृति के नियम द्वारा अनुशासन में आकर स्वयं को विकसित कर शरीर को शांत अवस्था में लाना। चौथा चरण है 'प्राणायाम' अर्थात भीतर की ऊर्जा को सही लय व दिशा देना, जो आसन के बाद ही घटित होती है। पांचवा चरण है 'प्रत्याहार' अर्थात बाहर व्यर्थ में पडी ऊर्जा को अपने पास लेकर आना। छठा चरण है 'धारणा' अर्थात अपनी चेतना की शक्ति को सही दिशा देकर जागृत करना। सातवां चरण है 'ध्यान' अर्थात वर्तमान में जीने की कला। आठवां चरण है 'समाधि' अर्थात समाधान जब हमारे लेफ्ट और राइट ब्रेन की पूरी शक्तियां जागृत हो जाती है, तब हमारे जीवन में समाधि की घटना घटित होती है। यदि 50% लोग भी ब्रेन की शक्तियों को जाग्रत कर लेंगे तो मित्रता, प्रेम, प्रतिष्ठा, सेवा, आदर, सहयोग, उदारता, मधुरता आदि के द्वारा सामाजिक जीवन में ऐसे आनंद के अवसर उपलब्ध होंगे जो रत्न से किसी प्रकार कम नहीं कहे जा सकते।

- रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)

हमारी वेवबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय	3
संरक्षक : श्री सौभागमल कुमावत	4
बधाई विज्ञापन	4
शिव प्रतिमा 'विश्वास स्वरूपम' का लोकार्पण हुआ	5
कुमावत गौरव : 'विश्वास स्वरूपम' के मूर्तिकार नरेश कुमावत	6
श्री गिरधारी लाल कुमावत : ज्योति शिक्षण संस्थान, उदयपुर की स्वर्ण जयंती	6
श्री डूंगरराम गैदर का ब्यावर, जैतारण, नागौर दौरा	7
स्वामिनी सेवा संस्था का हर घर दिवाली महोत्सव	7
तनुष मंडावरा को स्केटिंग प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल	7
मुम्बई में दीपावली स्नेह सम्मेलन/आजादी का अमृत महोत्सव का आयोजन हुआ	8
मोढेरा - सौर ऊर्जा संचालित गांव	8
इसरो ने किया 36 संचार उपग्रहों का पहला व्यावसायिक प्रक्षेपण	8
सामुहिक विवाह : 4 नवम्बर, 2022 : देवउठनी एकादशी	9
अद्भुत है हमारा देश भारत	9
संस्कार की परिचायक है 'वाणी'	9
समाज द्वारा युवाओं को प्रोत्साहित किया जाए	10
मानगढ़ धाम की गौरव गाथा	10
मानस में निरूपित राम का रूप एवं शील	11
295 साल का हुआ हमारा जयपुर...	13
सर्दी का मौसम और खान-पान	14
टीम चेतन धुंधारिया के संस्थापक एवं भाजपा ओबीसी मोर्चा जयपुर शहर के जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया	15
अमृत सिरोहिया को मिला भगवंत दास अवार्ड	15
राष्ट्रीय एथलीट में पूजा ने जीता कांस्य पदक	16
ब्लॉक स्तरीय दौड़ प्रतियोगिता नवीन कुमावत (अणतपुरा) तृतीय रहे	16
जिला स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता : पलक कुमावत ने जीता कांस्य	16
सीमा कुमावत राज्य स्तरीय जिमनास्टिक के लिए चयनित	16
धनराज कुमावत राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी में प्रदेश महासचिव नियुक्त	17
गरिमा कुमावत टीआरओ नियुक्त	17
पल्लवी कुमावत आईएएस के एसिस्टेंट कलेक्टर पद पर नियुक्त	17
राज्य स्तरीय नृत्य प्रतियोगिता : श्रीराम व वंदना चयनित	17
सूर्य प्रकाश का भारतीय वायुसेना में चयन	17
देवांशु कुमावत को ताइक्वांडो में पदक	17
कहां गये वो दिन	18
8वीं सदी से स्थापत्य, शिल्प कला व मूर्तिकला	19
800 करोड़ वें बच्चे का जन्म हुआ : विश्व जनसंख्या में मील का पत्थर	20
फ्री सिलाई मशीन योजना 2022	21
कुमावत समाज की बालाजी लाइब्रेरी का शुभारम्भ	21
इन्हें भी आजमाइये	22
विवाह एवं ज्योतिष : नाड़ी दोष एक विवेचन	23
प्रेम विवाह के ज्योतिषीय सूत्र	23
विशिष्ट संरक्षक/श्रद्धांजलि	24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	25
'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें	26
मिट्टी के गणेश बनाने की प्रतियोगिता कनिष्का कुमावत सम्मानित	27
यूजसी नेट परीक्षा के साथ जूनियर रिसर्च फैलोशिप	27
लक्की का राष्ट्रीय स्तर पर चयन	27
सी.के. हैण्डीक्राफ्टस द्वारा हस्तशिल्पियों के लिए हस्तशिल्प प्रोत्साहन सप्ताह का आयोजन	28
विज्ञापन	28
श्रद्धांजलि विज्ञापन	29-30

संरक्षक

श्री सौभागमल कुमावत

पुत्र श्री रामसहाय अजमेरा, पटेलों की ढाणी,
बाजणी तलाई, सांगानेर, जयपुर मो. 9214526961

आपका जन्म सदरपुरा तहसील मालपुरा जिला टोंक में 1.8.1967 को किसान परिवार में हुआ। आपने 8वीं कक्षा तक मालपुरा पर पढ़ाई की। आपने वर्ष 1991 से 2000 तक मदनगंज-किशनगढ़ में हिन्दी एकाउंटिंग का कार्य किया, इसके बाद वर्ष 2001 से कम्प्यूटर से एकाउन्टस का कार्य कर रहे हैं। वर्ष 2017 से निरन्तर जीएसअी एकाउंटिंग भी कर रहे हैं। आप समाजसेवी हैं, सदरपुर बालाजी मंदिर, खेड़ा बालाजी, बाल निवास, मालवीय नगर समाज भवन आदि में आपने आर्थिक योगदान दिया है।

आप कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति सांगानेर के कोषाध्यक्ष, बाजनी तलाई नगर विकास समिति के सचिव तथा श्री कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति खेड़ा बालाजी के सलाहकार हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

बधाई

श्री राजेन्द्र राजोरिया

संस्थापन शाखा, सवाई मानसिंह चिकित्सालय, जयपुर

अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी से 1 नवम्बर 2022 को प्रशासनिक अधिकारी के पद पर पदोन्नति होने पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाए

शुभेच्छू

हेमचन्द खड़गटा, हेमन्त राजोरिया, योगेन्द्र राजोरिया, राम प्रकाश खोरानियां, लक्ष्य कण्डेरीवाल, सुरेन्द्र कुलचानिया, मनीष खड़गटा, शैलेन्द्र खड़गटा

शिव प्रतिमा 'विश्वास स्वरूपम' का लोकार्पण हुआ

विश्व की सबसे ऊंची 369 फीट की शिव प्रतिमा राजस्थान के श्रीनाथजी की नगरी नाथद्वारा में 29 अक्टूबर 2022 को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं संत मोरारी बापू द्वारा किया गया। मिराज ग्रुप के मुख्य निदेशक **श्री मदन पालीवाल** ने 10 वर्ष पूर्व श्रीजी की नगरी में भगवान शिव की अल्लड़ मुद्रा में विश्व की सबसे बड़ी शिव मूर्ति बनवाने का सपना देखा था व यह ड्रीम प्रोजेक्ट तैयार किया। पर चुनौती यह थी कि इसे बनाएगा कौन ? फिर इसे बनाने के लिए उन्होंने **नरेश कुमावत** मूर्तिकार को चुना। दोनों की मेहनत से 10 वर्ष में आर्ट और टेक्नोलॉजी के साथ यह भव्य प्रोजेक्ट पूर्ण हुआ है।

भगवान शिव की यह अद्भुत प्रतिमा लोगों के आकर्षण के साथ ही देश और राजस्थान के पर्यटन में एक नया आयाम स्थापित करेगी। नाथद्वारा की गणेश टेकरी पर बनी यह प्रतिमा 51 बीघा की पहाडी पर बनी है। इस प्रतिमा में भगवान शिव ध्यान एवं अल्लड़ की मुद्रा में विराजित है जो **20 किलोमीटर दूर से ही नजर आने लग जाते है।** रात्रि में भी यह प्रतिमा स्पष्ट रूप से दिखाई दे, इसके लिए विशेष लाइट्स से सुसज्जित किया गया है। परिसर में नृत्य मुद्रा में नन्दी की 25 फिट ऊँची प्रतिमा भी लगाई गई है।

एक नजर विश्वास स्वरूप पर : विश्व की सबसे ऊंची शिव मूर्ति की अपनी एक अलग ही विशेषता है। यह प्रतिमा विश्व की अकेली प्रतिमा है जिसमें लिफ्ट, सीढ़ियां, श्रद्धालुओं के लिए हॉल बनाया गया है। प्रतिमा के अंदर सबसे ऊपरी हिस्से में जाने के लिए 4 लिफ्ट और तीन सीढ़ियां बनी हैं। प्रतिमा के निर्माण में 10 वर्षों का समय लगा और 600 टन स्टील, 2.5 लाख क्यूबिक टन कंक्रीट और रेत का इस्तेमाल हुआ है। इसमें 700 सीढियां, 270 फुट ऊंचाई पर कांच का ब्रिज, 300 से 351 फुट जाने के लिए 88 सीढ़ियां व 351 फुट पर जाकर किया जा सकेगा जलाभिषेक। इस प्रतिमा का निर्माण 250 वर्षों तक की स्थिरता को ध्यान रखते हुए किया गया है तथा 250 किमी रफ्तार से चलने वाली हवाएं भी मूर्ति को प्रभावित नहीं करेगी। इस प्रतिमा की डिजाइन को बरसात और धूप से बचाने के लिए इस पर जिंक की कोटिंग करके कॉपर कलर किया गया, प्रतिमा को '**तत पदम् संस्थान**' ने बनवाया है।

देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए उदयपुर के महाराणा प्रताप अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से 40 किमी और उदयपुर शहर से 45 किमी दूर नाथद्वारा में यह प्रतिमा स्थापित है। वहीं राजसमन्द जिला मुख्यालय से 15 किमी दूर स्थित है।

खेल और मनोरंजन : प्रतिमा स्थल पर पर्यटकों की सुविधाओं ओर मनोरंजन के लिये बंजी जम्पिंग का निर्माण किया गया है, जो ऋषिकेश के बाद दूसरी सबसे बड़ी बंजी जम्पिंग होगी। साथ ही फूडकोर्ट, गेम जोन, जिप लाइन, गो कार्टिंग, एडवेंचर पार्क, जंगल कैफे का निर्माण भी किया गया है। पर्यटक दिन भर यहां इसका लुफ्त उठा सकेंगे। शिव प्रतिमा पर विशेष रूप से लाइट एन्ड साउंड के थ्री डी के द्वारा शिव स्तुति का प्रसारण होगा। पर्यटकों के लिए यह बहुत की आकर्षण का केंद्र होगा। शिव प्रतिमा के सुरक्षा मानकों का पूर्ण ध्यान रखा गया है। फायर सेफ्टी की व्यवस्था की गई है, प्रतिमा के अंदर पानी के टैंक बनाये गए है साथ ही अग्नि शमन के साधनों की भरपूर उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। पर्यटकों के लिए गोल्फ कार्ट की सुविधा भी उपलब्ध करवाई गई है। साथ ही पर्याप्त सुरक्षाकर्मियों से परिसर सुरक्षित रहेगा।

नृत्य मुद्रा में नन्दी की प्रतिमा

राम कथा आयोजित

29 अक्टूबर से 6 नवम्बर तक यहां मुरारी बापू की रामकथा, इस लोकार्पण महोत्सव में सोने पर सुहागा की तरह थी। यह स्थान राजस्थान का कण-कण अपने शौर्य, बलिदान,भक्ति के साथ ही आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के कारण देश-विदेश के लोगों को बरबस ही आकर्षित करता है। महादेव के इस महामहोत्सव में 9 दिन तक धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक आयोजनों की धूम रही, मुरारी बापू की 9 दिवसीय रामकथा इस महोत्सव को चार चांद लगाये ओर इसके साक्षी बनेंगे देश दुनियां से आये लाखों श्रोता। इस महोत्सव में मुरारी बापू के प्रवचनों के साथ ही आस्था, संस्कृति, संगीत और कला का महासंगम हुआ। संत कृपा सनातन संस्थान की ओर से आयोजित इस महोत्सव का नजारा महाकुंभ से कम नहीं था। आयोजन के लिए करीब डेढ़ लाख स्क्वायर फिट का पांडाल था और करीब 2 लाख स्क्वायर फिट में भोजनशाला का पांडाल लगाया गया था। जिसमें श्रोताओं ने कथा श्रवण और भोजन प्रसादी का आनंद उठाया। इस भव्य आयोजन में प्रतिदिन करीब 50 से 60 हजार श्रद्धालु मुरारी बापू को सुनने के लिये एकत्रित हुए। बापू के व्यासपीठ का नज़ारा भी आकर्षण का केन्द्र था।

'विश्वास स्वरूपम' के मूर्तिकार नरेश कुमावत

13 दिसम्बर, 1975 को पिलानी में मूर्तिकार श्री मातुराम कुमावत के पुत्र का जन्म हुआ, नाम रखा गया **'नरेश कुमावत'**। इन्होंने फाईन आर्ट में स्नातक किया। पिता की विरासत को आगे बढ़ाने का निश्चय कर मूर्तिकला को अपनाया। हाल ही में नाथद्वारा में 369 फुट ऊँची शिव प्रतिमा 'विश्वास स्वरूपम' का 29 अक्टूबर 2022 को लोकार्पण हुआ। इस मूर्ति के निर्माता श्री नरेश कुमावत ही हैं। इनके दादाजी श्री हनुमान प्रसाद कुमावत थे जो भी सीकर राजघराने के मूर्तिकार थे। श्री नरेश ने मानेसर (हरियाणा) में मातुराम आर्ट सेन्टर स्थापित किया। इस स्टूडियो में इस शिव प्रतिमा के हिस्से बनाये गये जिसे बाद में नाथद्वारा लाकर जोड़ा गया। इस प्रकार 600 टन स्टील एवं 26618 क्यूबिक मी. सीमेन्ट कंकरीट से 30 हजार टन वजनी प्रतिमा का निर्माण किया गया। ये 65 देशों में अनेक विशाल मूर्तियां स्थापित कर चुके हैं। विश्व की सबसे ऊँची 825 फीट प्रतिमा अयोध्या में श्रीराम की, लोहित (अरुणाचल प्रदेश) में भगवान परशुराम की (51 फीट) प्रतिमा तथा दिल्ली सेन्ट्रल विस्टा में 125 फुट ऊँची अम्बेडकर की प्रतिमा स्थापित होने जा रही है। ये स्वयं का ढाई एकड़ में स्कल्पचर गार्डन भी बना रहे हैं। इन्होंने अमेरिका में विवेकानन्द, मस्कट व ओमान में गांधीजी, मारीशस में शिवजी (108 फीट) व दुर्गा 108 फीट, नेपाल में शिवजी (111फीट) की विशाल प्रतिमाएं भी बना चुके हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी नरेश कुमावत की तारीफ अनेक बार कर चुके हैं। अनेक राजनैतिक हस्तियों ने इनके मानेसर स्टूडियो का अवलोकन किया तथा इनके कार्यों की प्रशंसा की है। अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं ने इन्हें सम्मानित किया है।

नरेश कुमावत ने रामचरितमानस की चौपाई **'करम प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करई सो तस फल चाखा'** के भाव प्रेरणा के साथ हमेशा कर्म को ही पूजा और जीवन में प्रधानता दी। मूर्ति शिल्प में श्री नरेश कुमावत ने अपनी मेहनत एवं कौशल से देश-विदेश में अपने परिवार एवं कुमावत समाज को गौरवान्वित किया है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार श्री नरेश कुमावत को बधाई देते हुए इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

श्री गिरधारी लाल कुमावत

ज्योति शिक्षण संस्थान, उदयपुर की स्वर्ण जयंती

श्री गिरधारी लाल कुमावत का जन्म 10 जून, 1951 को श्रीनाथ जी की नगरी श्री नाथद्वारा निवासी श्री पुरुषोत्तम लाल जी के यहां हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा नाथद्वारा में हुई। बाल्यकाल से ही आपमें स्वाभिमान, आत्मविश्वास तथा कठिन परिस्थितियों से जुझने की क्षमता रही है। अल्पआयु में मीनाकारी, चित्रकारी व सिलाई जैसे कार्य सीखे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी रुचि होने से आपने पढ़ाना आरम्भ किया तथा विद्यालय भी स्थापित किया। आज ज्योति शिक्षण संस्थान का नाम उदयपुर सम्भाग में जाना पहचाना है। राष्ट्र की सेवा के लिए आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से प्रत्यक्ष रूप से जुडे, वर्ष 1966 में पुलां गांव में शाखा शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दी। परन्तु ये कुछ बड़ा करना चाहते थे। आपने उदयपुर से उच्च अध्ययन किया इसके बाद आपका विवाह 18 नवम्बर 1972 को श्री मोतीलाल जी कुमावत की पुत्री मधु के साथ सम्पन्न हुआ जो आपके कदम-कदम की साथी रही है।

27 नवम्बर 1972 को इन्होंने शून्य से जीवन यात्रा शुरु की तथा मात्र 13 विद्यार्थियों के साथ ज्योति बाल विद्यालय, खारोल कॉलोनी, फतेहपुरा, उदयपुर आरम्भ किया। आपकी यह यात्रा आज शिखर तक पहुंची है तथा ज्योति शिक्षण संस्थान में अभी 2510 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं तथा संस्थान का नाम चारों ओर प्रकाशमान है। संस्थान के अंतर्गत पांच विद्यालय, एस टी सी विद्यालय, एवं बी एड महाविद्यालय संचालित किये जा रहे है। आप ज्योति शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष पद पर हैं। आपकी प्रतिभा एवं लगन को देखकर आपको कुमावत समाज का नगर महामंत्री तथा प्रदेश महामंत्री मनोनीत किया गया। वर्तमान में आप समाज की महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं एवं राजनैतिक चेतना मंच दक्षिण पश्चिम जोन के प्रदेश संयोजक के पद पर सुशोभित हैं। कुमावत समाज की प्रतिभा सम्मान समारोह समिति के आप आर्थिक ट्रस्ट के संयोजक हैं। आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के सलाहकार हैं। आपके संस्थान के विद्यार्थियों को अनेक पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है तथा वे देश-विदेश में अपनी प्रतिभा से प्रभावित कर रहे हैं।

27 नवम्बर 2022 को ज्योति शिक्षण संस्थान अपने 50 वर्ष पूरे होने पर स्वर्ण जयंती मनाने जा रहा है। इसके पीछे गिरधारीलाल जी की सोच तथा कड़ी मेहनत रही है जिससे संस्थान ने अच्छी शिक्षा देकर व विद्यार्थियों में अच्छे चरित्र का निर्माण करके ख्याति अर्जित की।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार की ओर से ज्योति शिक्षण संस्थान की स्वर्णजयंती के अवसर पर हार्दिक बधाई तथा श्री गिरधारीलाल कुमावत के अच्छे स्वास्थ्य, दीर्घायु तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामना।

श्री डूंगरराम गैदर का ब्यावर, जैतारण, नागौर दौरा

6 नवम्बर, 2022 को शिल्प एवं माटीकला बोर्ड राजस्थान के अध्यक्ष माननीय श्री डूंगरराम गैदर ने ब्यावर, जैतारण, जसनगर, मेड़ता, नागौर का दौरा किया। इस दौरान आप कुमावत समाज बंधुओं से मिले जहां ब्यावर में श्री कैलाश खटोड़ (के.के. ग्रेनाइट व शेखावाटी आर्टिकल्स) व साथियों ने आपका भव्य स्वागत किया। आप यहां अध्यक्ष बनने के बाद प्रथम बार पधारे थे। इसके बाद आप जैतारण तथा नागौर के दौरे पर पहुंचे। कुचामनसिटी के दौरे में श्री गैदर ने खारिया रोड स्थित प्राचीन शिव मंदिर में पहुंच कर भगवान शंकर को जल चढ़ाया व देश की खुशहाली की कामना की। यहां श्री राजकुमार फौजी आदि समाजबंधुओं ने आपका भव्य स्वागत किया। मिठड़ी कस्बे पर आपका भव्य स्वागत हुआ। मण्डावरा चौराहे पर पहुंचने पर आपका भव्य स्वागत समाजबंधुओं ने किया जहां आपने समाजहितों की रक्षा करने तथा सरकारी योजना का फायदा दिलाने का हरसंभव सहयोग देने की घोषणा की।

श्री डूंगरराम गैदर को हाल ही में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा सरदार शहर उपचुनाव में स्टार प्रचारकों की सूची में सम्मिलित किया गया है। इन्होंने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तथा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा के साथ जनसभा को भी सम्बोधित किया।

श्री डूंगरराम गैदर समाजजनों एवं अपने कार्यकर्ताओं के बीच अत्यधिक लोकप्रिय नेता हैं तथा समाज को इनसे अत्यधिक अपेक्षाएं हैं।

जीवन में दूसरों के भी काम आयें।
स्वामिनी सेवा संस्था का हर घर दिवाली महोत्सव

हम किसी दूसरे के काम आ सकें, यह सुखी जीवन का एक मंत्र है। यह हमारी महानता भी होगी वहीं मन को संतोष एवं शान्ति मिलेगी। हमें वृक्ष से प्रेरणा मिलती है, वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाता, बल्की दूसरों के लिए गिरा देता है। सूर्य हमें प्रकाश देता है, बादल वर्षा जल देता है। जमीन हमें खाद्यान, फल, सब्जियां आदि देती है। ये सभी हमसे बदले में कुछ नहीं चाहते। यह कार्य बचपन से कर सकते हैं पर बच्चों को उनके माता-पिता व बुजुर्ग प्रेरित करें। जैसे गरीब बच्चों की सहायता करना, पक्षियों को दाना एवं पशुओं को चारा डालना, समाज के कमजोर वर्ग जैसे दिव्यांग, नेत्रहीन, वृद्धजनों की मदद करना। युवा होने पर अपनी आय का कुछ अंश दूसरों की सहायता हेतु निकालना। रक्तदान, नेत्रदान, अंगदान तथा देह दान आदि करके मानवता के प्रति किये गये कार्य से अलग ही संतोष मिलता है। यदि हमारे पास अधिक धन है तो विपत्ति में आये लोगों की मदद का नेक कार्य करें। कपड़ों की अधिकता है तो कुछ कपड़े स्त्री-पुरुष-बच्चे गरीबों को दे देवें तो उनका जीवन संवर जायेगा। कुछ वर्षों पूर्व 'नेकी की दीवार' की सोच आयी थी जहां अनुपयोगी वस्त्र लोग रख आते थे व जरूरतमंद वहां से ले जाते थे।

पिछले चार सालों से **स्वामिनी सेवा संस्था**, ''हर घर दिवाली महोत्सव'' का आयोजन कर रही है, जिसके तहत गरीब परिवारों, अस्पतालों में भर्ती मरीजों को दिवाली की मिठाई वितरित करके अनूठा कार्य कर रही है। इस दिवाली को इन्होंने 11,000 किग्रा मिठाई वितरित की है। यह संस्था प्रत्येक अमावस्या को सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर के बांगड़ वार्ड में मरीजों के लिए पौष्टिक, गर्म व ताजा भोजन बांटती है, हर तीन माह में नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर आयोजन तथा प्रत्येक छह माह में रक्तदान शिविर का आयोजन करती है। इसके सदस्य सेवा की भावना से अपना स्वयं का कार्य छोड़कर सेवा का यह पुण्य कार्य कर रहे हैं। इन्हें जन सहयोग भी मिल रहा है। ऐसे लोग तथा यह संस्था प्रशंसा व सहयोग की पात्र है। इसके अध्यक्ष श्री अशोक कुमावत (मो. 9352070394), मंत्री श्री गोविन्द वर्मा कुमावत (मो. 9001905456) तथा कोषाध्यक्ष गुरुदयाल वर्मा कुमावत (मो. 9314246781) है। स्वामिनी सेवा संस्था का कोटक महिन्द्रा बैंक में खाता सं. 6113247509 IFSC Code KKBK0003544 है। सेवा से जुड़ने की चाहत रखने वाले इस खाते में सहयोग राशि दे सकते हैं।

तनुष मंडावरा को स्केटिंग प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल

जिला स्तरीय स्केटिंग प्रतियोगिता में माउंट लिट्रा जी स्कूल, अलवर का प्रतिनिधित्व करते हुए अंडर 17 वर्ष कैटेगरी में स्व.श्री ईश्वर लाल जी मंडावरा के पौत्र तनुष मंडावरा (पुत्र मुकेश्वर-नीलिमा मंडावरा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर गोल्ड पदक जीता। इसके साथ ही वे राज्य स्तरीय स्केटिंग प्रतियोगिता के लिये चयनित हुए।

इस उपलब्धि के लिए 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से तनुष मंडावरा को हार्दिक बधाई।

मुम्बई में दीपावली स्नेह सम्मेलन/आजादी का अमृत महोत्सव का आयोजन हुआ

29 अक्टूबर 2022 को मुम्बई में दीपावली स्नेह सम्मेलन/आजादी का अमृत महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत आराध्य देव भगवान श्रीराम की पुजा-अर्चना एवं दीप प्रज्वलन से हुई। कार्यक्रम के आरंभ में दिवंगत आत्माओं को एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। समारोह के मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि: श्री नंदकुमार घोडेले (महापौर,औरंगाबाद), श्री गजानंद बारवाल (भूतपूर्व महापौर, औरंगाबाद), श्री राजेंद्र कुंडलवाल (उद्योगपति एवं अध्यक्ष कुमावत महासभा महाराष्ट्र जोन), श्री युधिष्ठिर कुमावत (राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा), श्री विष्णुदत्त कुमावत, श्री गुरु चरणजी जलिन्द्रा, श्री अभयजी मोरवाल तथा वरिष्ठ समाजजनों का सचिव व कोषाध्यक्ष द्वारा गुलदस्तें भेंटकर व उपरना ओढाकर स्वागत किया गया।

दीपावली स्नेह सम्मेलन में अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी घोडेला ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में समाज बंधुओं का आभार व्यक्त किया।

सचिव श्री हीरालालजी मोरवाल ने अपने सम्बोधन में संस्था प्रारम्भ से अबतक तथा भावी गतिविधियों की जानकारी दी। साथ ही उन्होंने श्री ओम प्रकाश घोडला के प्रयास से जल्द ही संस्था के लिए मुंबई महानगरी में भव्य भवन बनाने हेतु जमीन खरीदने की जानकारी दी। यह सुनकर समाज बंधुओं के चेहरे खुशी से खिल उठे। सभी ने इस कदम की काफी प्रशंसा की।

इस अवसर पर श्रीमती सीमा विधाधरजी मोरवाल के नेतृत्व में समाज की कलाकार महिलाओं व बच्चों ने परम्परागत रंगारंग सांस्कृतिक उत्कृष्ट नृत्य आजादी का अमृत महोत्सव की प्रस्तुति करते हुवे खूब तालियां बटोरी। अपने समाज के कलाकारों का जोश एवं उत्साह भरा नृत्य देखने लायक था जो कि स्नेह सम्मेलन कार्यक्रम की एक विशेषता रही।

श्री विधाधरजी मोरवाल व श्रीमती जयश्री ने परिष्कृत एवं सफल मंच संचालन किया। सभी प्रतिभागियों की रचनात्मक एवं प्रतिभा पर सदा की तरह यकीन रहा विश्वास रहा और अंतत परिणाम सुखद रूप से सामने आया। सभी प्रतिभागियों ने तन-मन से इस कार्यक्रम में भागीदारी कर चार चांद लगाएं।

समाज बंन्धुओं से सतत एवं निर्बाध आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ जो की अभिभूति करने वाला है। उन सभी को पुष्पगुच्छ भेटकर सम्मान किया व धन्यवाद दिया।

श्री ताराचंद बड़ीवाल, श्री राकेश मारवाल, श्री मनोज मोरवाल ने सफलतापूर्वक मंच सह-संचालन किया। श्री महेश जी मिस्त्री, श्री कृष्ण मुरारी लाल जी वर्मा, श्री शंकर लाल जी आशीवाल ने रजिस्ट्रेशन काउंटर का सफल संचालन किया।

संस्था ने आर्थिक सहयोगकर्ताओं की ओर से सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया तथा उपस्थित समाजजनों नेतालियां बजाकर बच्चों को प्रोत्साहित किया। भायंदर से आवागमन की व्यवस्था में श्री कैलाश कुमावत ने सहयोग किया। श्री बिहारी लाल तैरपुरियां, श्री बाबूलाल घोडैला, श्री उमाशंकर सिरस्वा व श्री प्रकाश सिरस्वा ने कार्यक्रम संयोजक की भूमिका बहुत ही खुबसूरती से निभाई।

श्रीमती सीमा-विद्याधरजी मोरवाल एवं श्रीमती माया-महेश जी मिस्त्री ने सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजिका हेतु सहायक भूमिका निभाई। सभी की गरिमामयी उपस्थिति का गौरव और उनका अतुल्य सहयोग आयोजक संस्था को प्राप्त हुआ ।

अंत में कोषाध्यक्ष श्री उमाशंकर सिरस्वा ने सभी सहयोगी बन्धुओं को इस सफल आयोजन हेतु हार्दिक बधाई दी।

श्री ओमप्रकाश जी घोडेला अध्यक्ष के नेतृत्व मे यह सफल आयोजन हुआ। श्री धीरज मारोठिया ने व्यवस्थापक का दायित्व सफलतापूर्वक निभाया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। इसके बाद उपस्थित समाजजनों ने स्वादिष्ट स्नेहभोज का लुत्फ उठाया एवं सभी ने प्रशंसा की।

मोढेरा - सौर ऊर्जा संचालित गांव

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 अक्टूबर को गुजरात के मेहसाणा जिले में मोढेरा को भारत का पहला 24 × 7 सौर ऊर्जा संचालित गांव घोषित किया।

एक रैली को संबोधित करते हुए, पीएम ने कहा, '' मोढेरा, मेहसाणा और पूरे उत्तर गुजरात के लिए विकास की एक नई ऊर्जा का संचार किया गया है। बिजली, पानी से लेकर सड़क और रेल तक। डेयरी, कौशल विकास और स्वास्थ्य सेवा से संबंधित कई परियोजनाएं की गई हैं। उद्घाटन और आधारशिला रखी गई है।''

उन्होंने कहा कि मोढेरा सूर्य मंदिर के लिए जाना जाता था, अब इसे सौर ऊर्जा से चलने वाला गांव भी कहा जाएगा।

इसरो ने किया 36 संचार उपग्रहों का पहला व्यावसायिक प्रक्षेपण

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) अंतरिक्ष एजेंसी के सबसे भारी रॉकेट लॉन्च व्हीकल LVM3-M2 से 36 ब्रॉडबैंड संचार उपग्रहों का अपना पहला व्यावसायिक प्रक्षेपण आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्पेसपोर्ट 43.5 मीटर लंबा रॉकेट 23 अक्टूबर 2022 को दोपहर 12.07 बजे सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के दूसरे लॉन्च पैड से उड़ान भरी। रॉकेट को 8,000 किलोग्राम तक के उपग्रहों को ले जाने की क्षमता के लिए सबसे भारी में से एक के रूप में करार दिया गया है। 18 नवम्बर, 2022 को इसरो ने स्काईरूट एयरोस्पेस, प्राइवेट कम्पनी के राकेट 'विक्रम-एस' को हरिकोटा से लांच कर इतिहास रचा। इस अभियान का नाम 'प्रथम' रखा था।

सामुहिक विवाह : 4 नवम्बर, 2022 : देवउठनी एकादशी

कुचामन। 16 जोड़े विवाह बन्धन में बंधे। यह आयोजन कुमावत विकास समिति के तत्वावधान में हुआ। समिति का यह 11वां सामुहिक विवाह सम्मेलन था। सम्मेलन में हरिश कुमावत पूर्व विधायक तथा संरक्षक अध्यक्ष बाबूलाल कुमावत पलाडा, राधेश्याम काम्या सीकर के समाज सेवी, मोहन लाल दादरवाल, खारिया सरपंच देवीलाल दादरवाल, राजकुमार फौजी आदि गणमान्य समाजबन्धुओं ने भाग लिया। वर-वधुओं का विवाह पूरे विधि-विधान से सम्पन्न हुआ, उन्हें सोने-चांदी के आभूषण एवं घरेलू सामान उपहार में दिये गये।

इस अवसर पर समाज के भामाशाहों का गर्मजोशी से माला पहनाकर, साफा बंधवाकर तथा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया। भवन निर्माण में 5,51,000 रुपये का सहयोग देने के लिए राजोरिया परिवार का भी इस अवसर पर सम्मान किया गया। वक्ताओं ने कहा कि **शादी-विवाह पर अनावश्यक खर्च नहीं करें बल्की यह राशि बच्चों की शिक्षा पर खर्च कर उन्हें योग्य एवं आत्मनिर्भर बनाने में करें।** सामुहिक विवाह का उद्देश्य ही फिजूलखर्ची रोकना है। समिति अध्यक्ष बाबूलाल कुमावत ने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए कार्यकर्ताओं तथा समाजजनों का आभार व्यक्त किया।

कालाडेरा, चौमूं। क्षत्रिय कुमावत समाज एकता संस्थान, चौमूं के तत्वावधान में सामुहिक विवाह सम्मेलन कालाडेरा में आयोजित हुआ इसमें 8 युवक-युवतियां विवाह सूत्र में बंधे। अतिथियों ने नवदम्पत्तियों को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर क्षत्रिय कुमावत समाज एकता संस्थान चौमूं तथा सामुहिक विवाह समिति के पदाधिकारियों सहित समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे। सामुहिक विवाह समाज के गरीब परिवारों के लिए वरदान है। समृद्ध परिवार भी अपने बच्चों का विवाह, सामुहिक विवाह सम्मेलन में करके प्रोत्साहित करें। इससे बची धनराशि को शिक्षा के विकास में लगाये।

अद्भुत है हमारा देश भारत

हमारा जन्म भारत में हुआ है यह हम पर ईश्वर की अपार कृपा ही है। जहां प्रकृति ने हमारे देश में 7 ऋतुऐं दी वहीं देश के भूभाग में एक ही समय में सर्दी व गर्मी की उपलब्ध है। उत्तर में हिमालय जहां बर्फ से आच्छादित है वहीं दक्षिण में तीन ओर समुद्र के रूप में अपार जलसंसाधन है। हिमालय से निकली अनेक नदियां भारत के भू-भाग को सींच रही हैं वहीं ये कृषि के लिए वरदान है। जहां नदियां होती है वहीं लोग बसते हैं तथा संस्कृति का विकास होता है। गंगा जैसी पवित्र एवं जीवनदायिनी नदी का जल अनेक वर्ष तक संग्रहित रखने पर भी खराब नहीं होता। इसके किनारें ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयागराज जैसे धार्मिक व पवित्र नगर विकसित हुए। हिमालय की कंदराओं में अनेक ऋषि मुनियों ने तपस्या कर भारत को समृद्ध ज्ञान व साहित्य दिया तथा अनेक जड़ी बूटियों से परिचय कराया।

भारत की इस पवित्र भूमि पर जहां मर्यादा पुरुषोत्तमराम व नटखट कृष्ण ने अवतार लिया तथा मानवरूप में अनेक लीलाएं की वहीं अनेक देवी-देवताओं ने चहुँओर अवतार लिया तथा पापों का नाश कर मनुष्यता को बचाया। इसी भूमि पर कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया जो सभी युगों में सार्वभौमिक व सत्य है।

इसी भूमि पर उत्तर से दक्षिण तक 12 ज्योर्तिलिंग प्रतिष्ठित हैं वहीं विष्णु भगवान के तिरूपति मंदिर की महिमा अपार है। उत्तर में जहाँ वैष्णो देवी तथा हिमाचल की देवियां है वहीं दक्षिण के मैसूर नगर में महिसासुर मर्दनी चामुण्डा की ख्याति से हम परिचित हैं। राजस्थान व अन्य राज्यों में लोक देवता व देवियां हैं जिन्हें स्थानीय लोग अपना ईष्ट मानकर पूजते हैं। धार्मिक व अन्य स्थानों पर वर्ष में मेलों का आयोजन होता रहता है जो हमारी संस्कृति का परिचायक होने के साथ विविधता में एकता का प्रमाण है। यहां प्रकृति के प्रतीक पेड़ पौधे, गाय तथा पत्थर भी पूजे जाते हैं। दक्षिण भारत के अनेक मंदिरों की स्थापत्य कला व अलंकरण हमें मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

ये सब हमें जीव मात्र के प्रति दया का भाव सीखते हैं वहीं दान-दक्षिणा से हमारे में त्याग करने की भावना विकसित होती है। गीता हमें कर्म का महत्व बताती है वहीं रामायण हमें जीवन में कर्तव्य, मर्यादा तथा आदर्श की सीख देती है। संतों के उपदेश हमें मानवता का अक्षुण रखने, सदाचार तथा सद्भाव की शिक्षा देते हैं। आज अनेक भारतीय यहाँ से शिक्षा ग्रहण करके विदेशों में अपने ज्ञान व प्रतिभा का लौहा मनवा रहे हैं। हमें गर्व है कि हमने भारत में जन्म लिया।

संस्कार की परिचायक है 'वाणी'

'वाणी' के लिए शब्दों का उपयुक्त एवं उचित चयन जरूरी है। इसमें भाषा संयमित, हितकारी, सत्य, सारपूर्ण, संक्षिप्त तथा मधुर हो। वाणी ऐसी हो जो दूसरों को प्रिय लगे। कटुवचन, उच्च स्वर में बोलना, अश्लील भाषा बोलना तथा आदेशात्मक रूप से बोलना अप्रिय लगेगा ही। इसलिए जब भी बोले तो "पहले तोल लीजिये, फिर बोलिये।" क्योंकि गोली व चोट का घाव तो भर सकता है किन्तु कटु/अपशब्द/अपमानजनक बोल के घाव नहीं भरते। इसके अलावा सुनने वाले के मन में प्रतिशोध की भावना आ सकती है। कबीर ने कहा था—**"ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को शीतल करें आपहु शीतल होय।"** इसलिए हमें लोक व्यवहार में वाणी तथा संवाद की उत्कृष्टता, मधुरता तथा गरिमा का विशेष ध्यान रखना चाहिये। महाभारत का युद्ध द्रोपदी द्वारा दुर्योधन को बोले गये कटु वचन के कारण ही तो हुआ था। रामायण तथा रामचरितमानस को देखें तो राम की वाणि हमें बहुत कुछ सीखने का अवसर देती है। अत: वाणी हितकारी व समयानुकूल हो, जिसकी वाणी में रस है उसका जीवन सफल है। चिन्तन और मनन करके सरल, सारपूर्ण व संक्षिप्त वाणी प्रवीणता के साथ बोलने का अभ्यास करें तथा मृदुभाषी बने। ऐसा व्यक्ति संस्कार युक्त माना जाता है तथा जीवन में अन्य लोगों से श्रेष्ठता हासिल करता है।

- रमेश गैदर

समाज द्वारा युवाओं को प्रोत्साहित किया जाए

हम सभी के लिए यह अत्यन्त गोरव की बात है कि आज हमारी युवा पीढ़ी ने हमारे समाज का नाम शिक्षा, खेलकूद, राजनैतिक क्रियाकलाप तथा अन्य अनेकों गतिविधियों में न केवल देशभर में अपितु दुनियाभर में रोशन किया है। आज हमारे समाज के होनहार युवक तथा युवतियां देश-विदेश में अपनी कला, हुनर, बुद्धिमत्ता तथा बहादुरी के दम पर कुमावत समाज का परचम लहरा रहे हैं। उन सभी के लिए हमारी यही शुभकामनाएं हैं कि वे निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो तथा सफलता के उच्चतम शिखर पर अपनी पहचान बनाएं। मगर आज भी अनेक परिवार ऐसे हैं जो आर्थिक विषमता तथा जानकारी के अभाव के कारण अपने बच्चों को वांछित क्षेत्र में आगे बढ़ा पाने में अक्षम है क्योंकि गांवों तथा दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक सामाजिक जागरूकता जानकारियां तथा सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं तथा योजनाओं का लाभ सुगमता से नहीं पहुंच पाता जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले या आर्थिक रूप से कमजोर होनहार बालक आगे बढ़ने से वंचित रह जाते हैं। सामाजिक संगठनों, समितियों तथा राजनीति में कार्यरत सामाजिक सदस्यों की यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वे समाज के होनहार तथा योग्य युवक-युवतियों को वांछित क्षेत्र में आगे बढ़ाने में यथा संभव मदद करें क्योंकि हमारे समाज के युवा जब राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान कामय करेंगे तब निश्चित रूप से समाज का नाम भी नये आयामों पर अपना स्थान हासिल करेगा। आज हमारे समाज में शिक्षा के क्षेत्र में तथा वैवाहिक संस्कारों के क्षेत्रृ में बहुत जागरुकता आयी है। अनेक गणमान्य समाज जन तथा संगठन विलक्षण तथा बुद्धिमान छात्र-छात्राओं को जिनके परिवार जन उनकी शिक्षा का व्यय वहन करने में अक्षम है, स्कॉलरशिप, मुफ्त किताब-कॉपी, फीस का खर्च इत्यादि के रूप में उनकी यथा संभव मदद करने की दिशा में आगे आए हैं। इसी प्रकार सामूहिक विवाहों का समय-समय पर आयोजन करके समाज की कन्याओं के विवाह संस्कार में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सहयोग की दिशा में अनेकाने महानुभाव व्यक्ति तथा समितियां इत्यादि प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। इसी दिशा में मेरा यह सुझाव है कि होनहार खिलाड़ियों, कलाकारों, विद्यार्थियों इत्यादि को आगे बढ़ने हेतु आर्थिक सहायता देने की दिशा में प्रयास किए जाएं क्योंकि बड़े स्तर पर पहचान बनाना काफी खर्चीला होता है तथा एक व्यक्ति निजी स्तर पर इतना बड़ा खर्च वहन नहीं कर पाता ओर इसी कारण अनेक प्रतिभाएं वांछित ऊँचाइयों पर पहुंच ही नहीं पाती। यह हमारे सम्पूर्ण समाज वासियों के लिए शोचनीय विषय है क्योंकि युवाओं का विकास ही समाज का विकास है। समाज के जो भी सदस्यगण राजनीतिक पदों पर आसीन है उनसे मैं विशेष रूप से कहूँगी कि आपके क्षेत्र में इस प्रकार की कोई विशेष प्रतिभा है तो उन्हें आपके स्तर पर संभव हो सके जितनी सुविधा मुहैया कराके आगे बढ़ने में मदद करें। आपका सहयोग यदि समाज को गौरवान्ि वत करने में सहायक होता है तो यह आपके लिए भी अत्यन्त गरिमा का विषय है। **- उर्वशी बालोदिया**

मानगढ़ धाम की गौरव गाथा

30 अक्टूबर, 2022, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मानगढ़ आना तथा गोविन्द गुरु को पुष्पाजंली अर्पित करके श्रद्धांजलि अर्पित करके स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम जनजाति नायकों के बलिदान को याद कर नमन करना राजस्थान के लिए एक सुखद अनुभूति थी। प्रधानमंत्री ने मानगढ़ में 17 नवम्बर, 1913 के नरसंहार के बारे में कहा कि भारत में ब्रिटिश शासन की क्रूरता का यह ऐसा उदाहरण है जिसमें पहाड़ी पर 1500 आदिवासी स्वतंत्रता की लड़ाई में शहीद हुए। मानगढ़ की पवित्र भूमि हमारे जनजातीय वीरों की तपस्या, त्याग और बलिदान की प्रतीक है तथा यह स्थान राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के लोगों की सांझी विरासत है। उन्होंने मानगढ़ धाम के भव्य विस्तार की इच्छा व्यक्त की तथा इन राज्यों की सरकारों से एक साथ मिलकर काम करने को कहा जिससे की दुनिया के नक्शें में इस स्थान को जगह मिल सके।

इस अवसर पर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं राज्यपाल मंगूभाई पटेल, केन्द्रीय संस्कृति मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री ने 15 नवम्बर को ''जनजातीय गौरव दिवस'' भगवान बिरसा मुण्डा के जन्म दिवस पर मनाया जायेगा। यह स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों के इतिहास केा जन-जन तक पहुंचा कर शिक्षित करने का प्रयास बताया। इसके लिए आदिवासियों को समर्पित विशेष संग्रहालय देशभर में बनाये जायेंगे जो युवा पीढ़ी को प्रेरणा देगी। आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान गुमनाम शहीदों व उनकी कर्मभूमि को याद करने के लिए यह कदम सदैव याद रखा जाएगा।

मानस में निरूपित राम का रूप एवं शील

प्रो. बालकृष्ण कुमावत

जिस रूप को देखने पर प्राणियों को यह प्रतीत हो कि अब देखने के लिये कुछ भी शेष नहीं है, वही पूर्ण सौन्दर्य है। संसार और श्रीराम के सौन्दर्य में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि संसार में सौन्दर्य को देखकर उपमा दी जाती है वह उपमा श्रेष्ठ होती है तथा उपमेय कनिष्ठ होता है। किन्तु भगवान के सम्बन्ध में बात उलटी है, यहाँ उपमा छोटी पड़ जाती है और उपमेय हो जाता है बड़ा। प्रभु श्रीराम के श्रीविग्रह के लिये गोस्वामी जी ने एक साथ तीन उपमाएँ दी। पहले कहा कि प्रभु का रूप **नील-सरोरूह** के सदृश है, फिर कहा कि यह **नीलमणि** के सदृश है और जब सन्तोष न हुआ तो वे पुन: बोल उठे कि यह **नील नीर धर** के सदृश है।

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तनु सोभा निरखि कोटि कोटि सतकाम। (मा.1/146)

अर्थात्-भगवान के नीले कमल, नीलमणि और नीले (जलयुक्त) मेघ के समान (कोमल, प्रकाशमय और सरस) श्याम वर्ण (चिन्मय) शरीर की शोभा देखकर करोड़ों कामदेव भी लजा जाते हैं।

''रंग से राम सुन्दर लगते हैं'' इसके स्थान पर भक्त कहता है कि राम इतने सुन्दर हैं कि जिस रंग को स्वीकार करलें वही जगमगा उठे। राम के रूप ने श्यामता को भी सुन्दर बना दिया। राम की श्यामता एक रंग मात्र ही नहीं, वह चैतन्य की दिव्य और अलौकिक आभा है जो उनके जीवन के हर क्षण में उन्हें अलौकिक करती है आश्वासन देती है, आह्लाद का आस्वादन और वितरण कराती है। राम का अनिर्वचनीय रूप (सौन्दर्य) पार्थिक जगत के ऊपर उठकर विराट से एकाकार कर देता है। राम के स्वरूप को गोस्वामी जी ने उस सीमा तक चित्रित किया है, जहाँ वह मनुष्यों को ही नहीं पशु-पक्षी और जलचरों को भी आकृष्ट कर लेता है। राम अपने अनुपम रूप-माधुर्य के द्वारा सौन्दर्य की सारी मान्यताओं की सीमा पार कर चुके हैं। सुन्दरता के सम्बन्ध में देश-काल आदि की भिन्नता से मान्यताओं में अन्तर पाया जाता है, पर राम के सौन्दर्य-वर्णन में गोस्वामी जी मानव जाति से आगे बढ़कर पशु-पक्षियों में भी उस सुन्दरता को प्रतिष्ठापित करते हैं। उनकी इस प्रकार की आस्था के पीछे राम का ईश्वरत्व है। ईश्वर देश, काल, व्यक्ति की सीमाओं से परिछिन्न नहीं है। अत: उसके प्रति सबका प्रेम और आकर्षण स्वाभाविक है।

शरीर धारी तीन ही प्रकार के होते हैं जलचर, थलचर और नभचर। मानस में इन सबके उदाहरण मिलते है।

थलचर:

कहहु सखी अस को तनुधात्र।
जो न मोह यह रूप निहारी। (मानस/221)

जनकपुर में युवती-स्त्रियाँ घर के झरोखों से प्रेम सहित श्रीरामचन्द्र जी के रूप को देखकर परस्पर कह रही है-हे सखी ! इन पर करोड़ों कामदेवों को निछावर कर देना चाहिये। ऐसा कौन शरीर धारी होगा जो इस रूप को देखकर मोहित न हो जाय।

महाराजा जनक ने श्री राम-लक्ष्मण को देखकर यहाँ तक कह दिया कि वेदों ने ''नेति'' कहकर गान किया है कहीं वह ब्रह्म तो युगल रूप धरकर नहीं आया है। मेरा मन जो स्वभाव से ही वैराग्य रूप है, इन्हें देखकर इस तरह मुग्ध हो रहा है जैसे चन्द्रमा को देखकर चकोर। इनको देखकर अत्यन्त प्रेम के वश होकर मेरे मन ने बरबस ब्रह्मसुख को त्याग दिया है।

ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय वेष धरि की सो आवा।।
सहज बिराग रूप मनु मोरा। चकित होत जिमि चंद चकोरा।।
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। बरबस बह्म सुखहि मन त्यागा।।
(मानस 1/216)

खरदूषण ने जब राम-लक्ष्मण को देखा तो उनकी सौन्दर्य-माधुर्य निधि से चकित होकर वे बोले कि जितने भी नाग असुर देवता मनुष्य और मुनि हैं, उनमें से हमने न जाने कितने ही देखे, जीते और मार डाले हैं। पर हे सब भाईयों 7 सुनो, हमने जन्मभर में ऐसी सुन्दरता कहीं नहीं देखी।

नाग असुर सुर नर मुनि जेते। देखे जिते हते हम केते।
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई। देखी नहिं असि सुन्दरताई।।
(मानस 3/19 क)

साँपिनी और बीछी जब रास्ते में जाते हुए प्रभु राम को देखती हैं तो अपने भयानक विष और तीव्र क्रोध को त्याग देती हैं।

जिन्हहिं निरखि मग साँपिनि बीछी।
तजहिं विषम विषु तामस तीछी।। (मानस 2 /261)

जलचर : सेतुबन्ध के अवसर पर कृपालु श्रीरघुनाथ जी तट पर चढ़कर समुद्र का विस्तार देखने लगे। प्रभु के दर्शन के लिये सब जलचरों के समूह प्रकट हो ऊपर निकल आये। वे सब (वैर-विरोध भूलकर) प्रभु के दर्शन कर रहे है, हटाने पर भी नहीं हटते। सबके मन हर्षित हैं, सब सुखी हो गये।

देखन कहूँ प्रभु करुना कंदा। प्रगट भये सब जलचर वृन्दा।।
प्रभुहि बिलोकहिं टरहिं न टारे। मन हरषित सब भए सुखारे।।
(मानस 6/4)

नभचर : पक्षी और पशु भी वन में प्रभु को देखकर प्रेमानन्द में मनन हो जाते हैं। प्रभु ने उनके भी चित्त चुरा लिये है।

खग मृग मगन देखि छबि होहीं।
लिए चोरि चित राम बटोहीं।। (मानस 2/122)

शील : सौन्दर्य-शील का स्वर्ण-सुगन्ध जैसा दुर्लभ योग केवल राम में ही पाया जाता है। शील है जीवन-वांटिका का सबसे रसीला और दुर्लभ फल, धर्म का सार-सर्वस्व, व्यवहार का बेजोड़ वरदान, वाणी का अनमोल बोल जो सत्य को पूर्णता प्रदान करता है। गोस्वामी जी की दृष्टि में शील सत्य की अपेक्षा भी श्रेष्ठतर है। शीलवान कई रूपों में हमारे सामने आते हैं-सहनशील, धर्मशील, दानशील, दमशील अध्ययनशील आदि। शील है स्वभाव की सहजता। सदगुण जिसके स्वभाव का अंग बन चुका है, वह शील हो गया। शीलवान कभी गर्व तो कर ही नहीं सकता क्योंकि गर्व सर्वथा प्रयत्न-जन्य विशिष्टता पर ही

होता है। अतएव शील गुण की अपूर्णता को दूर करता है। यदि शील शब्द का स्वतंत्र अर्थ लिया जाय तो वह स्वभाव की सहज मृदुता होगा। इसलिए ही शील को सबसे उत्कृष्ट धर्म बताया गया है। जिन गुणों के साथ शील जुड़ जाता है, उन्हें स्वाभाविक और सम्पूर्ण बना देता है। जब तक धर्म क्रिया में है, तब तक सबसे नीचे है जब धर्म बुद्धि में प्रवेश करे तों उसका उत्थान हुआ और जब धर्म स्वभाव में आ गया तो धर्म अपनी पूर्णता पर पहुँच गया। ये तीन स्तर हैं- धर्म क्रिया में, धर्म विचार में और धर्म स्वभाव में। अतएव स्वभावगत धर्म का सर्वोत्कृष्ट रूप शील में ही है। यदि शील स्वभावगत न होकर क्रियागत होगा तो वह दम्भ कहलाएगा। जीवन में जब स्वभावगत परिवर्तन आ जायेगा, तो व्यक्ति को धर्म का पालन करना नहीं पड़ेगा, वरन वह होने लगेगा।

श्री राम शील की अनुपम निधि हैं। बाल्यावस्था में वे-भरत जी की विजय खेल में होने पर इतने अधिक प्रसत्र हो जाते हैं कि उस उल्लास में दान की झड़ी लगा देते हैं। वे मानते हैं कि विजय की प्रसन्नता संग्रह की वृत्ति है। पराजय का सुख दानवृत्ति की प्रसन्नता है। पराजय में आनन्द की अनुभूति श्री राघवेन्द्र की विजय ही है। इसे हम उनके शील की विजय कहेंगे। भरत जी ने चित्रकूट में एक सभा में कहा भी हैं-

मैं प्रभु कृपा रीति जियें जोही।
हारे हूँ खेल जितावहिं मोही।। **(2/260)**

भगवान श्री राम, परशुराम के ब्राह्मणत्त्व का समादर करते हैं यही है राम का शील। परशुराम प्रभु की दैन्य हीन नम्रता से चकित हो जाते हैं। उन्हें यह प्रतीत होता है कि यह पूर्ण पुरुष का अवतरण है। परशुराम पराजित हुए और रामचन्द्र विजयी। पर इस पराजय और विजय का स्वरूप सर्वथा भिन्न है। यहाँ विजेता नम्रता से सिर झुकाए खड़ा है और पराजित लज्जा या ग्लानि के साथ पर आनन्द में डूबा हुआ है। यही प्रभु के शील का सच्चा चित्र है। विदा होते समय परशुराम जी प्रभु की स्तुति करते हैं और उन्हें शील-सागर की उपाधि देते हैं।

विनय सील करुना गुन सागर।
जयति बचन रचना अति नागर।। **(1/285)**

अर्थात्-हे विनय, शील, कृपा आदि गुणों के समुद्र और वचनों की रचना में अत्यन्त चतुर ! आपकी जय हो।

प्रभु के शील का एक उदाहरण और देखिये। महाराजा दशरथ उन्हें युवराज पद देने की घोषणा करते हैं। दूसरे की वस्तु छीनने की चेष्ट करना अधर्म है, अपनी जो धर्मानुकूल प्राप्त वस्तु है, उस पर अधिकार कर लेना धर्म है, पर अधिकार प्राप्त वस्तु को दूसरे को दे देना शील है। शील का आशय वस्तु के अधिकार की स्वीकृति मात्र नहीं बल्कि प्राप्त वस्तु का भी त्याग है। शील का वास्तविक अभिप्राय है-जहाँ हम धर्म का पालन तो करते हैं पर उसके द्वारा प्राप्त फल नहीं लेते। वह किसी दूसरे को देना चाहते हैं। यह शील का उत्कृष्टतम रूप है। भगवान राम का शील उनके मित्रों के मन पर ऐसा प्रभाव डालता है कि वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं- .

जेहि जेहि जोनि करम बस भ्रमहीं। तहें तहें ईसु देउ यह हमहीं।।
सेवक हम स्वामी सिय नाहू। होउ नाथ यह और निबाहु।।
(मानस 2/24)

अयोध्या का प्रत्येक नागरिक भगवान से यही माँगता है कि राम के राज्य में ही हम मर जायें -

अछत राम राजा अवध मरिअं माग सब कोउ।। (2/273)

प्रभु कहने के लिये राजा हैं, पर संसार के प्रत्येक प्राणी के हैं सेंवक। यहीं प्रभु का विलक्षण शील हैं-

जेहि समान अतिसय नहिं कोई।
ता कर सील कस न अस होई।। **(मानस 3/6)**

जहाँ शील है, वहाँ कुछ आ जाता है और जहाँ शील नहीं है वहाँ से सब कुछ चला जाता है। इस सम्बन्ध में महाभारत में एक कथा है। एक बार प्रहलाद जब राजा हुए तब इन्द्र का धन ऐश्वर्य उन्होंने छीन लिया। इन्द्र गरीब हो गये। तब वे गुरुजी के पास गये। गुरु जी ने कहा-तुम अब प्रहलाद के पास जाओ और सीख आओ कि ऐश्वर्य और सम्पत्ति कैसे मिलती है? इन्द्र प्रहलाद के पास गये, उनकी सेवा की। प्रहलाद बड़े प्रसन्न हुए और बोले कि तुम्हारी इच्छा हो सो हमसे माँग लो। इन्द्र बोले-अच्छा हमें धन दो, कि ले जाओ, ऐश्वर्य दो, कि ले जाओ, धर्म दो, कि ले जाओ। जो-जो माँगा, सो-सो दे दिया।

अब लक्ष्मी जी निकली कि मैं जा रही हूँ कि-जाओ देवी। सत्य निकला, कि जाओ, धर्म निकला, कि जाओ, इसी बीच में उनके शरीर में से शील निकला, तब प्रहलाद बोलें-ठहरों 7 सब कुछ मैं इन्द्र को नहीं दे सकता-शील मेरा है। शीतल लौटकर आ गया और प्रहलाद के शरीर में बस गया। तब धर्म भी लौट आया, सत्य भी लौंट आया लक्ष्मी भी लौट आई क्योंकि जो शीलवान होता है उसी के अन्दर सारे सदगुण होते हैं। इन्द्र ने पूछा कि शील ऐसी क या चीज है कि सत्य, धर्म सब का सब लौट आया। इन्द्र के गुरु बोले-

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहः सदा दान शीलमे तत् प्रशस्यते।।

अर्थात-मन, कर्म, वचन के साथ द्रोह मत करों, किसी का बुरा मत चाहो, किसी का अनिष्ट मत चाहो, सबके ऊपर अनुग्रह और सबको कुछ-न-कुछ दो। यही शील है और यही जीवन का सबसे प्रशस्त रूप है।

प्रो. बालकृष्ण कुमावत को प्रथम पुरस्कार

अखिल भारतीय रामायण प्रेमी भक्त समूह और ज्ञान मंदिर, किशनगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ओपन मेगा निबन्ध/कविता लेखन प्रतियोगिता में देश विदेश के सैकड़ों प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी ने अत्यंत सराहनीय प्रयास किया है। विषय था—

'मानस में निरूपित राम का रूप और शील।'

निर्णायक मण्डल द्वारा इस लेख के लिए प्रो. बालकृष्ण कुमावत, उज्जैन (मध्य प्रदेश) को प्रथम विजेता चुना गया। आप एक उत्कृष्ट लेखक हैं।

राम प्रेम की सौरभ से, महक उठा सर्वत्र।
शीश आपके सज उठा, भक्ति विजय यश छत्र।।

आपको प्रथम पुरस्कार मिलने पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

295 साल का हुआ हमारा जयपुर: परकोटे में स्थित रास्तों के नामों से जुड़े रोचक तथ्य

आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने साल 1727 में जयपुर शहर को बसाया। इसकी नींव गंगापोल दरवाजे पर लगाई गई। जयपुर, जिसे गुलाबी शहर के नाम से जाना जाता है। परकोटे की सुरक्षा के लिए बुर्जे चारदीवारी और दरवाजों का निर्माण करवाया गया। लोहे व लकड़ी से बने ये गेट इतने मजबूत हैं जिन्हें रियासतकाल में आक्रमण के वक्त दुश्मनों के लिए भी भेदना नामुमकिन था। जयपुर अपनी समृद्ध भवन निर्माण-परंपरा, सरस-संस्कृति और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। अपनी वास्तुकला और बसावट के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध जयपुर को यूनेस्को से खिताब दिलाने में यहां की तीनों प्रमुख चौपड़ों का बड़ा योगदान रहा है। ये चौपड़ पहले जयपुर के प्रमुख जल स्त्रोत कुंड के रूप में बनाई गई थीं। समय के साथ-साथ ये कुंड चौपड़ बन गए और इनमें भी छोटी चौपड़ और बड़ी चौपड़ अब मेट्रो स्टेशन का हिस्सा बन चुके हैं। जयपुर शहर तीन ओर से अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ है।

जयपुर के राजा ने ढूंढाड़ क्षेत्र के आस-पास के गांवों से आए लोगों को चारदीवारी में बसाया था। परिवारों के काम करने की कला के हिसाब से उन्हें काम दिए गए और आगे चलकर जयपुर के मुख्य रास्तों के नाम इन्हीं परिवारों के मुखिया या परिवारों के नाम पर प्रसिद्ध हो गए। परकोटे जयपुर के इन रास्तों की अजीबोगरीब नामों के पीछे की कहानी आखिर क्या है? आइए जाने-

1. **रामलला जी का रास्ता :** जौहरी बाजार के इस रास्ते का नाम एक मंदिर की वजह से पड़ा। भगवान राम का बाल्यावस्था मूरत में यहां एक मंदिर बना हुआ है जिसके चलते इस रास्ते को रामलला जी का रास्ता कहा जाता है।
2. **पीतलियों का रास्ता :** राजा महाराजाओं के समय में इस रास्ते में पीतल के बर्तन बनाए जाते थे जिसके लिए राजा ने कई कारखाने भी लगवाए थे। इसलिए आगे चलकर इस नाम से इस रास्ते को पहचाना गया।
3. **हल्दियों का रास्ता :** जब राजस्थान में रियासतों का राज था उस समय के महाराजा ने यहां हल्दियां हाउस का निर्माण करवाया था जिसके बाद इसका नाम हल्दियों का रास्ता पड़ गया।
4. **घी वालों का रास्ता :** राज के शासनकाल में यहां घी का कारोबार अधिक होता था जिसकी वजह से इस रास्ते को घी वालों का रास्ता कहा गया।
5. **ठठेरों का रास्ता :** ठठेरा समाज के लोगों को राजा के शासनकाल में काफी मान-सम्मान मिला। राजा ने ठठेरा समाज के लोगों को परकोटे में रहने के लिए जगह दी। ठठेरे चांदी, कांसा, पीतल के बर्तन के कारीगर थे जो बर्तन बनाने का काम करते थे। इसलिए इस रास्ते को ठठेरों का रास्ता कहा जाता है।
6. **मणिहारों का रास्ता :** लाख चूड़ी बनाने वाले परंपरागत कारीगरों को मणिहारी कहा जाता है। राजा महाराजाओं शासनकाल के दौरान यहां लाख की चूडी-पाटला बनाने वाले कारीगर रहा करते थे और लाख की चूडियां बनाने का कार्य किया करते थे। इसलिए इस रास्ते का नाम मणिहारों का रास्ता पड़ा।
7. **लालजी सांड का रास्ता :** जयपुर के पूर्व राजा माधोसिंह के बेटे लालसिंह पर वैध ने एक नई आयुर्वेदिक दवाई के नुस्खे का पहली बार प्रयोग किया, जिससे बाद अचानक से उसका शरीर बढ़ने लगा और वो ताकतवर हो गया। हर किसी को मारने लगा और उठाकर पटकने लगा। माधोसिंह ने इस समस्या से निपटने के लिए इस इलाके में उस समय एक जेल का निर्माण करवाया जहां लालसिंह को कैद रखा गया। तब से ही इस रास्ते को लालजी सांड का रास्ता के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में यहां साडियों का कारोबार होता है।
8. **टिक्कीवालों का रास्ता :** महाराजा के शासनकाल के दौरान सेठ-साहूकारों का बोलबाला था। उन्हें विशेष व्यवस्था देने के लिए गांवों से शहर लाकर बसाया जाता था। साहूकार ब्याज पर टके यानि पैसे दिया करते थे। इसलिए इस रास्ते को टिक्कीहवालों के रास्ते के नाम से जाना जाता है।
9. **खूंटेटों का रास्ता :** जयपुर के बसने के समय से ही इस एरिया में खंडेलवाल समाज के लोग रहते थे, इसके अलावा यहां खूंटेटा समाज का पुराना मंदिर भी है। यहां कोने पर खूटेंटा नमकीन भंडार के नाम से एक दुकान है जहां बिना छिले आलू की प्रसिद्ध कचौरी मिलती है। इसलिए इस रास्ते को खूटेंटों का रास्ता के नाम से जाना जाता है।
10. **टिक्कड़मल का रास्ता :** सालों पहले यहां पर एक व्यक्ति मोटी रोटी का टिक्कड़ बनाकर बेचता था इस वजह से इसका नाम टिक्कड़मल का रास्ता पड़ा।

परकोटे में ऐसे और भी अनेक रास्ते हैं जिनका नाम राजा महाराजाओं के समय से जाना पहचाना जाता है। लेकिन विकास की अंधी दौड़ में यहां की हवा अब पहले जैसी साफ नहीं रही यहां की आबो हवा लगातार प्रदूषित होती जा रही है। जयपुर ऐसा शहर है जिसने पूरे हिन्दुस्तान को बदलते देखा है मुगलों का राज ब्रिटिश राज और उसके बाद आजादी। तब से लेकर आज तक काफी कुछ बदला लेकिन बदलते दौर के साथ जयपुर की सुरक्षा के लिए बनी चारदीवारी आज भी मौजूद है। परकोटे के बाहर भी नये शहर के विकास के साथ काफी चुनौतियों सामने आई। आज हमें जरूरत है जिस सकारात्मक सोच के साथ और प्यार मुहब्बत से जयपुर उस दौर में बसाया गया, वह बना रहे। विकास के साथ-साथ जयपुर की विरासत को भी बेहतर तरीके से सहेजा जाए।

-सोनम कुमावत, बरकत नगर जयपुर

सर्दी का मौसम और खान-पान

हमारे शरीर में मौजूदा ''रोग प्रतिरोधक शक्ति'' शाक एब्जार्बर का काम करती है। यह शारीरिक शक्ति और क्षमता, शरीर दुष्प्रभाव का मुकाबला व बचाव करती है। ऋतु चर्या (मौसम) के उचित खान-पान व जीवन शैली अपनाने से यह रोग प्रतिरोधक शक्ति बनी रहती है और शरीर दुष्परिणामों और दुष्प्रभावों का शिकार होने से बचा रह कर स्वास्थ्य व निरोग रहता है।

सर्दी का मौसम

सर्दी के मौसम में हमारी पाचन शक्ति बहुत बढ़ जाती है। इसके कारण इस मौसम में खाया-पीया आसानी से पच जाता है। इससे हमारे शरीर को पर्याप्त मात्रा में उचित व पौष्टिक तत्वों (खाद्य पदार्थों) के नहीं मिलने पर शरीर की धातुएं जलकर कम हो जाती हैं। इसलिए पौष्टिक तत्वों का सेवन करना जरूरी होता है। अन्यथा शरीर को नुकसान पहुंचता है। आजकल वजन नहीं बढ़ने देने व स्लीम (पतला) रहने की चाह में डायटिंग पर रहने की प्रवृत्ति के कारण शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन विटामिन युक्त खानपान नहीं लेते हैं। ऐसे व्यक्तियों का शरीर व त्वचा कमजोर होकर नुकसान पहुँचता है। इस मौसम में जब गहरी ठंड शुरू हो जावे तब विशेष पौष्टिक तत्वों से युक्त खान-पान का सेवन जरूरी होता है। इसकी कमी से शरीर में गैस की समस्या रहती है, इसे हम समझ नहीं पाते हैं। इस मौसम में कब्ज नहीं रहे यह विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस मौसम में इनका सेवन उपयोगी है।

पौष्टिक **खाद्य पदार्थ में**-रेशेदार अनाज, गेहूं, बाजरा, मक्का, जौ, रागी, सोयाबीन तथा अंकुरित अनाज, दाले, उड़द की दाल के पदार्थ तिल-मूंगफली व पुराना गुड, से बने पदार्थ, च्यवनप्राश, आंवला, सेब का मुरब्बा आदि।

सब्जियों में-पालक, गोभी, पत्तागोभी, हरे मटर, लौकी, गाजर, मूली, ककड़ी, खीरा, चुकुंदर, लहसून, ब्रोकली, अदरक, नींबू, राजमा, चावल आदि।

ताजा फलों में- सेब, अनार, संतरा, चीकू, पपीता, पाइनेपल, केला, मौसमी आदि अथवा इसका बिना शक्कर का जूस, अन्य पदार्थ में-दुध, घी, मिश्री, शहद, खजूर, हरी सब्जियों का अथवा टमाटर का सूप, नारियल पानी, ग्रीन टी, ताजा दही (दोपहर को), सुबह अदरक, लौंक व तुलसी डालकर दूध की चाय आदि।

सुखे मेवों में-बादाम, अखरोट, चिलगोजा, पिस्ता, अंजीर, खजूर, तालमखाना, 2 छुआरों को दूध में उबालकर पीना लाभदायक रहता है।

मसालों में-विशेषकर सौंठ, लौंग, दाल-चीनी, काली मिर्च, दाना मेथी, तेजपता, जायलफल आदि का शरीर के माफिक सेवन करना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहता है।

इस मौसम में प्रात:काल सूरज उगने से पहले उठकर निवृत्त होकर साफ हवा में सैर करना शरीर की क्षमता अनुसार व्यायाम व योगासन करना, कुछ समय के बाद शरीर की मालिश करके अथवा उबटन करके गुनगुने पानी से स्नान करना बहुत ही लाभदायक रहता है। दिन में एक बार सुबह की धूप में बैठकर धूप का सेवन करने से विटामिन डी के सेवन से हड्डियों को बहुत ही लाभ पहुंचता है।

इनका सेवन स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है: सर्दी के मौसम में रुखें, बासे, कड़वें, अधिक ठण्डी प्रकृति के तथा खटाई में इमली खट्टा दही, आम का अचार आदि का अधिक मात्रा में व नियमित सेवन नुकसान पहुंचाता है। इसी प्रकार से कफ बढ़ाने वाले पदार्थ जैसे दुग्ध के बने उत्पाद केक, पेस्ट्री, बैकरी प्रोडक्ट, मैदा के उत्पाद सफेद ब्रेड, अधिक मिर्च मसालेदार पदार्थ जंक व फास्ट फूडस, कोल्ड ड्रिक्स व अधिक ठंडे पेय पदार्थ, अधिक चाय, काफी तथा बाजार में बिकने वाले ऐसे पदार्थ जो प्रिजरवेटिव व शर्करायुक्त डालकर बनाए जाते हैं, इनका सेवन स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है।

देर तक जागना, सुबह देरी तक सोना, ठंड को सहन करना, देर तक भुखे रहना, स्नान नहीं करना भी उचित नहीं रहता है। अत: अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें और प्रसन्न रहें।

नये सदस्य

कुमावत इंडिया पत्रिका के निम्न सदस्य बने हैं, इनका 'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार में हार्दिक स्वागत है:-

वि./143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्सटेंशन, जयपुर
वि./144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टावर, सोडाला, जयपुर
सं. 129 श्री उमाशंकर नीमिवाल, रामनगर, सोडाला, जयपुर
सं./130 श्री सौभागमल अजमेरा, पटेलों की ढाणी, सांगानेर
10/215 श्री बलराज मारवाल, रामनगर एक्स., सोडाला, जयपुर
10/216 श्री राजेश कुमार नोखवाल, आगरा रोड, उज्जैन
10/217 श्री विष्णु कुमार जलान्धरा, लालकोठी स्कीम, जयपुर
10/218 श्री कैलाश चन्द राहोरिया, बजाजनगर, जयपुर
5/163 श्री द्वारका प्रसाद सुखड़ीवाल, महेशनगर, जयपुर
5/164 श्री मुकेश मरोडिया, निवारू रोड, जयपुर
5/165 श्री रामप्रकाश बालोदिया, रामनगर, एक्स., जयपुर
5/166 श्री राकेश वर्मा, आदर्शनगर, जयपुर
5/167 श्री सुभाष मारोठिया, मालवीय नगर, जयपुर
5/168 श्री मनोज रेणीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
5/169 श्री सेडूराम राणोलिया, हवा सड़क, जयपुर
5/170 श्री सत्यनायण, शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा, जयपुर

टीम चेतन धुंधारिया के संस्थापक एवं भाजपा ओबीसी मोर्चा जयपुर शहर के जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया

समाजसेवी, भामाशाह, टीम चेतन धुंधारिया के संस्थापक व भाजपा ओबीसी मोर्चा जयपुर शहर के जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत का जन्मदिन बड़े ही धूमधाम व उत्साह के साथ मनाया गया। अनेक स्थानों पर केक काटे गए तथा पौधारोपण कर तुलसी के पौधे वितरित किये गये। राजस्थानी परम्परा के अनुसार अनेक स्थानों पर साफा बांधकर कुमावत का स्वागत किया गया। इस अवसर पर समाजबंधुओं व विभिन्न मंडलों द्वारा अनेक सेवा कार्यों का आयोजन कर जिलाध्यक्ष की दीर्घायु व उज्ज्वल भविष्य कामना की।

इस अवसर पर कुमावत इंडिया पत्रिका की ओर से रमेश कुमावत अध्यक्ष, भारती तोंदवाल सचिव, सी.एम. बडीवाल, चेतन बालोदिया ट्रस्टी, रामप्रकाश मारवाल सम्पादक, जयसिंह कुमावत सह-सम्पादक, खेमचंद खड़गटा उप कोषाध्यक्ष, महेश जलान्धरा, सुरेन्द्र मारोठिया व्यवस्थापक मंडल सदस्य व रमेश तोंदवाल ने माला, दुपट्टा पहनाकर व पुष्पगुच्छ भेंट कर बधाई दी।

चेतन कुमावत ने अपने जन्मदिन को बेहद खास अंदाज में मनाया है :

(1) **सुकन्या समृद्धि योजना** के तहत 101 बच्चियों के खाते खुलवाये हैं। इस अवसर पर करणी विहार मंडल ओबीसी मोर्चा के कार्यक्रम में पासबुक वितरित की गई। चेतन कुमावत ने कहा कि हमें अपनी बेटियों का भविष्य सुरक्षित करने के लिए सुकन्या समृद्धि खाते अवश्य खुलवाने चाहिए।

(2) जयसिंह कुमावत जिला मंत्री व संदीप कुमावत कार्यकारिणी सदस्य ओबीसी मोर्चा जयपुर द्वारा महेश नगर मंडल के वार्ड 145 में **हनुमान चालीसा पाठ व मंत्रोचार के साथ दीर्घायु के लिए हवन** करवाया। इस अवसर पर भारी संख्या में वार्डवासी व भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे। सभी ने चेतन कुमावत के दीर्घायु होने की कामना की।

(3) श्रवण कुमावत अध्यक्ष महेश नगर मंडल ओबीसी मोर्चा द्वारा जन्मदिवस के अवसर पर **सेवा भारती आश्रम**, महेश नगर में फल वितरण किया गया। स्कूल के बच्चों द्वारा कुमावत को तिलक लगाकर उनकी आरती उतारी व दीर्घायु के लिए मंगलगीत गाये। ज्ञात हो कि इस आश्रम में की संचालिका विमलाजी कुमावत है जो वर्षों से गरीब, अनाथ व बेसहारा बच्चों को इस आश्रम में रखकर शिक्षा देती हैं।

(4) निवास पर मुरली लहर हॉस्पीटल, धावास एव जिंदल आई हॉस्पीटल, वैशाली नगर के सौजन्य से स्वास्थ्य जांच, चिकित्सा एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में बड़ी संख्या में लोग पहुंचे अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई।

(5) गौशालाओं में **गायों व बछड़ों को हरे चारे** के साथ गुड़ खिलाया व जल महल पर मछलियों को दाना खिलाया।

(6) कुमावत क्षत्रिय विकास समिति, बरकत नगर **बाबा रामदेव मंदिर में चल रहे जीर्णोदार व समाजोत्थान के लिए 11,000 रूपये की सहयोग राशि** समिति के अध्यक्ष बाबूलालजी ब्याड़वाल को भेंट की। समिति द्वारा कुमावत का माला व दुपट्टा **शेष पृष्ठ 19 पर...**

अमृत सिरोहिया को मिला भगवंत दास अवार्ड

परंपरागत हस्तशिल्प के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय द्वारा जेम स्टोन को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाले अमृत सिरोहिया को भगवंत दास अवार्ड दिया गया। सिटी पैलेस में महारानी पद्मिनी देवी और राजसमंद सांसद दीया कुमारी ने सिरोहिया को अवॉर्ड दिया। श्री अमृत को 31 हजार रुपए, श्रीफल, शॉल, प्रशस्ति पत्र और कलश देकर सम्मानित किया गया।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई।

राष्ट्रीय एथलीट में पूजा ने जीता कांस्य पदक

20 किमी. पैदल चाल इवेंट, अण्डर 23 वर्ग में राष्ट्रीय एथलीट प्रतियोगिता, झारखण्ड में भीलवाड़ा मण्डल के छाजवों का खेड़ा निवासी **पूजा कुमावत** ने कांस्य पदक जीतकर कुमावत समाज का नाम रोशन किया है। पूजा कुमावत ने जयपुर के एस.एम.एस. स्टेडियम में अभ्यास किया था। पूजा ने इससे पहले राज्य स्तर प्रतियोगिता में लगातार तीन साल सिल्वर मैडल व स्वर्ण मैडल जीता था, इसी आधार पर पूजा का चयन राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए हुआ था।

यहां यह बताना जरूरी समझते हैं कि पूजा की खेलों में रुचि बचपन से ही थी। कक्षा 12 उत्तीर्ण करने के बाद पूजा एसटीसी करने जयपुर आयी। जयपुर में पैदल चाल की प्रेक्टिस करते देख उनके परिवार ने मना किया पर पूजा की दृढ़ता अभ्यास के प्रति रही। पूजा का चयन सरकारी शिक्षक में हो गया था, किन्तु उसने यह नौकरी राष्ट्रीय प्रतियोगिता में जाने तथा कड़े अभ्यास के लिए छोड़ दी। आखिर उसने पदक जीता ओर परिवार तथा समाज को गौरवान्वित किया।

पूजा कुमावत को इस उपलब्धि के लिए 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई व उज्ज्वल भविष्य के लिए कामना।

ब्लॉक स्तरीय दौड़ प्रतियोगिता

नवीन कुमावत (अणतपुरा) तृतीय रहे

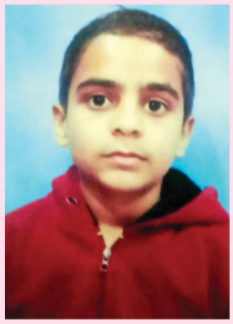

अनंतपुरा(नि.स) कस्बे के निकटतम ग्राम पंचायत अणतपुरा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 8 के छात्र नवीन कुमावत पुत्र भागचंद कुमावत ने 66 वीं शिक्षा विभागीय प्रतियोगिता, बासडी कला में 200 मीटर प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में जयपुर जिला किशनगढ़ रेनवाल तहसील के 38 स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया पीटीआई धीरज सिंह राठौड़ व विद्यालय प्रतिनिधि व्याख्याता बजरंग शिवरान ने बताया कि इस प्रतियोगिता में ऐथलीट्स में 100 मीटर, 200 मीटर, खो-खो, लंबीकूद, ऊँचीकूद, फुटबॉल व अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान हीरा लाल कुमावत वरिष्ठ अध्यापक दुलीचंद कुमावत, विधायक निर्मल कुमावत, रामस्वरूप कुमावत बीएसएफ सुबेदार तारा चंद कुमावत मोहन लाल कुमावत सहित गणमान्य लोगों ने बधाई दी।

-मोना कुमावत, अणतपुरा पत्रकार

जिला स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता

पलक कुमावत ने जीता कांस्य

66वीं जिला स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता, छोटी खाटू में विश्वकर्मा विद्यालय की छात्रा पलक कुमावत ने 48 किलो भार वर्ग में कांस्य पदक जीता है। राजकुमार फौजी ने संस्था में पहुंचकर बच्चों को मिठाई खिलाई तथा प्रतीक चिह्न देकर बधाई दी।

सीमा कुमावत राज्य स्तरीय जिमनास्टिक के लिए चयनित

सीमा कुमावत पुत्री श्री बलराम कुमावत कुचामन जिला स्तरीय जिमनास्टिक प्रतियोगिता में राज्य स्तरीय जिमनास्टिक के लिए चयनित हुई है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामना।

मनदीप कुमावत सम्मानित

स्वामी विवेकानन्द युवा मण्डल हाथोज के अध्यक्ष मनदीप कुमावत को सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य एवं सेवा के लिए नेहरू युवा केन्द्र जयपुर के उपनिदेशक श्री महेन्द्र सिंह सिसोदिया ने 11 हजार रुपये का नकद व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। इन्होंने जिला स्तर पर अपने गांव व आसपास के क्षेत्रों में सेवाकार्य किये हैं।

धनराज कुमावत राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी में प्रदेश महासचिव नियुक्त

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी ओबीसी विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैप्टन अजय सिह यादव के निर्देशानुसार धनराज कुमावत को प्रदेश महासचिव पद पर नियुक्ति दी गई है। धनराज कुमावत ने अपने राजनैतिक कैरियर शुरूआत बहुजन समाज पार्टी से की थी। कुमावत बसपा में महासचिव, जिला संयोजक तथा प्रदेश सचिव के पद पर रहे। वर्ष 2003 में वे बनीपार्क विधानसभा से व वर्ष 2013 में मालवीय नगर विधानसभा से बसपा के टिकट पर चुनाव लड़ चुके हैं। वर्ष 2014 में कुमावत ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। पार्टी ने उन्हें जयपुर जिला कांग्रेस कमेटी में उपाध्यक्ष बनाया। इनके कार्यों को देखते हुए इन्हें ओबीसी प्रकोष्ठ में वरिष्ठ उपाध्यक्ष नियुक्त किया था। इनकी लगन और कार्यशैली से प्रभावित होकर पार्टी ने इन्हें **प्रदेश महासचिव** नियुक्त किया। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार की ओर श्री धनराज कुमावत को हार्दिक बधाई।

गरिमा कुमावत TRO नियुक्त

आज बेटियां भी बेटों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है, इसको चरितार्थ किया है समाज की बेटी गरिमा कुमावत ने।

गरिमा कुमावत को राष्ट्रीय रक्षा युनिवर्सिटी, गांधीनगर गुजरात में डिपार्टमेंट ऑफ इंटरनल सिक्योरिटी डिफेंस एंड स्ट्रेटेजिक स्टडीज में TRO टीचिंग कम रिसर्च आफिसर के पद पर नियुक्त किया गया है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामना।

राज्य स्तरीय नृत्य प्रतियोगिता श्रीराम व वंदना चयनित

वंदे भारत नृत्य उत्सव, 2023 के लिए राज्य स्तर पर श्रीराम व वंदना कुमावत (भाई-बहिन) को चयनित किया गया है। ये अब 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह, दिल्ली में प्रस्तुति देंगे। इन्हें युवा प्रतिभा खोज महोत्सव में कला रत्न से सम्मानित किया जा चुका है। दोनों ही लुप्त हो रही राजस्थानी कला ओर संस्कृति को बचाने के लिए प्रयासरत हैं।

पल्लवी कुमावत IAS के एसिस्टेंट कलेक्टर के पद पर प्रथम नियुक्ति होने पर **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

सूर्य प्रकाश कुमावत पुत्र श्री रतनलाल कुमावत धुमाणिया, कुचामनसिटी का भारतीय वायुसेना में चयन होने पर हार्दिक बधाई।

देवांशु कुमावत को ताइक्वांडो में पदक

स्कूल गेम फेडरेशन ऑफ इण्डिया ताइक्वांडो प्रतियोगिता में जयपुर के देवांशु कुमावत ने (अण्डर 19 तथा 50 किलो ग्राम भार वर्ग) में कांस्य पदक जीता है। बधाई

जयसिंह गुडीवाल सह सम्पादक की कलम से...

कहाँ गये वो दिन

खेल जो हमें खूब भाते थे...

मैं जानता हूं कि पिछले 5 वर्षों में आपको 'कुमावत इंडिया' पत्रिका पढ़ने की और मुझे कुछ नया लिखने की आदत सी हो गई है। हम सभी के बीच एक रिश्ता बन गया है। मैं धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होनें मुझ पर भरोसा किया और इतना प्यार दिया। साथ ही मैं 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पाठकों को हाथ जोड़कर धन्यवाद देता हूं जिन्होंने 'कुमावत इंडिया' पत्रिका पर अटूट विश्वास किया और इतना स्नेह दिया। आपके विश्वास और स्नेह का यह रिश्ता दिनों-दिन और मजबूत होता जा रहा है। इस माह से हम एक नया कॉलम शुरू करने जा रहे है जिसका नाम है 'कहां गये वो दिन' मैं कुमावत इंडिया पत्रिका के पाठकों के भरोसे के लिए आज बहुत उत्साहित हूं, उत्सुक हूं और उम्मीद करता हूं 'कहां गये वो दिन'... नया कॉलम आपको जरूर पंसद आयेगा। हम सब मिलकर प्रयास करेंगे कि प्रतिमाह आपके जीवन में यादों के नये रंग भरते चले जायें। इसमें आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

भारतवर्ष अपनी संस्कृति और परंपरा के लिए विश्व पटल पर अपनी एक अलग पहचान रखता है। यहां खेले जाने वाले पारम्परिक खेल भी इसी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये सच है कि वक्त के साथ दुनिया बदलती है, विकास होता है, हमारी सोच, विचार और आदतें और प्राथमिकताएं बदलती हैं...परन्तु इन बदलावों में हमसे वो चीजें पीछे छूट जाती हैं, जो कभी हमारी जिंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा हुआ करती थीं जैसे वो खेल जिनके साथ हम बड़े हुए हैं जैसे सितोलिया, कंचे, रूमाल झपट्टा और गिल्ली डंडा आदि। इनका उल्लेख पौराणिक कथाओं में भी मिलता है। हालांकि अब समय बदल गया और इसके साथ ही खेलों में भी बदलाव आ गया है। प्ले स्टेशन, वीडियो गेम और गैजेट के दौर में बच्चे पारंपरिक खेलों को भूल गए हैं। जो कुछ कमी बची थी उसे किताबों से भरे बैग ने पूरी कर दी है। देखकर तो लगता कि पुराने खेल कहीं इतिहास के पन्नों में न दर्ज हो जाएं और हमारी आने वाली पीढ़ी इसे सिर्फकागजों में खोजती रह जाए।

गिल्ली-डंडा : यह बचपन के सबसे लोकप्रिय खेलों में से एक था। गिल्ली-डंडा, क्रिकेट और बेसबॉल से मिलता जुलता ये खेल एक वक्त में क्रिकेट से भी ज्यादा लोकप्रिय हुआ करता था। बच्चों के अंदर इसको लेकर खासा क्रेज हुआ करता था। इसे खेलने के लिए थोड़ी-सी सावधानी बरतने की जरूरत होती है। क्योंकि, जरा सी चूक किसी की भी आंख फोड़ सकती है। इसको खेलने के लिए कम से कम दो खिलाड़ियों की आवश्यकता होती है। एक खिलाड़ी डंडे की मदद से गिल्ली के सिरे पर प्रहार कर उसे ज्यादा से ज्यादा दूर तक पहुंचाने की कोशिश करता है। वहीं दूसरे खिलाड़ी को गिल्ली को उसके लास्ट प्वाइंट से सोर्स प्वाइंट तक थ्रो कर पहुंचाना होता है। जगह बदलने पर इसके नियम अलग हो सकते हैं।

आंख-मिचौली : आंख-मिचौली एक मजेदार खेल है। इसे लड़के-लड़कियां एक साथ या अलग-अलग टोलियां बनाकर खेल सकते हैं। इस खेल में किसी एक खिलाड़ी के आंख में एक कपड़े की पट्टी बांध दी जाती है। यह खिलाड़ी पट्टी बांधे-बांधे अपने आसपास के खिलाड़ियों को पकड़ने की कोशिश करता है जिसे वह पकड़ लेता है तो फिर पट्टी उसके आंखों में बांधी जाती है। जिसके आंख में पट्टी बंधी होती है उसके सिर पर कई लोग एक-एक करके थप्पी देते हैं। सबसे पहले थप्पी किसनें दी उसका नाम पट्टी बांधने वाले खिलाड़ी को बताना होता है। इस खेल में खिलाड़ियों की संख्या पर प्रतिबंध नहीं होता।

छुपन-छुपाई : ये खेल पहले सर्दियों में खूब खेला जाता था। पुआल के और लकड़ियों के ढेर में कहीं भी छुप जाओ दूसरा साथी खोजता रहता था। एक साथी 100 तक गिनती गिनता तब तक आस-पास सभी साथी छिप जाते। एक-एक करके सभी साथियों को खोजना होता है, अगर इस दौरान जो खिलाड़ी खोज रहा है उसे छुपा हुआ कोई भी साथी पीछे से उसके सिर को छू ले तो उसे दोबारा पूरे साथियों को खोजना होता है। **शेष पृष्ठ 20 पर...**

कुमावत समाज की देन-5

8वीं सदी से स्थापत्य, शिल्प कला व मूर्तिकला

वास्तुकला

भवनों के विन्यास आकल्पन और रचना की तथा परिवर्तनशील समय तकनीक और रूचि के अनुसार मानव की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने योग्य सभी प्रकार के स्थानों के तर्कसंगत एवं बुद्दिसंगत निर्माण की कला विज्ञान तथा तकनीक का सम्मिश्रण वास्तुकला कहलाती हैं। वास्तुकला पुरातन काल की सामाजिक स्थिति प्रकाश में लाने वाला मुद्रणालय कही गई है। इसको और स्पष्ट किया जा सकता है! यह ललित कला की वह शाखा है जिसका उद्देश्य प्रौधोगिकी का सहयोग लेते हुए उपयोगिता अनुसार उत्तम भवन निर्माण करना है। जिसका पर्यावरण सुसंस्कृत एवं कलात्मक रूचि के लिए अत्यंत प्रिय सौंदर्य भावना से पोषक तथा आनन्दकर एव आनन्दवर्द्धक हो प्रकृति बुद्धि द्वारा निर्धारित कर कतिपय सिद्धांतों व अनुपातों से रचना करना इस कला की मुख्य धारा है। नक्शों व पिंडो का ऐसा विन्यास करना व भवनों की संरचना को अत्यंत उपयुक्त ढंग से समृद्ध करना, जिससे अधिकतम सुविधाओं के साथ रोचकता सौंदर्य, महानता, एकरूपता, और शक्ति की सृष्टि हो वह वास्तु शास्त्र कहलाता है। प्रारंभिक अवस्थाओं में अथवा स्वल्पासिद्धि, के साथ वास्तुकला का स्थान मानव के लिए सीमित प्रयोजनों आवश्यक पेशा या व्यवसायों में प्राय: मनुष्य के लिए किसी प्रकार का रक्षा स्थान प्रदान करने के लिए होता था। धीरे-धीरे यह कला एक महत्वपूर्ण योगदान देने वाली कला में परिवर्तित हो गई, प्राचीन काल में इस कला को राज परिवारों के सदस्यों ने अपना ली, समय काल के अनुसार इस कला के पारखी अलग अलग सम्प्रदायों के नामों से जाना जाने लगे, जैसे समय बीतता गया यह कला जाति विशेष की धरोहर के रूप में जानने लगी। किसी जाति के इतिहास में वास्तुकृतियाँ महत्वपूर्ण तब होती है जब उसके वास्तुकारों के बनाये अंश विलासिता,भव्यता व समृद्धि के प्रतीक बनने लगे और उसमे उस जाति के गर्व, प्रतिष्ठा, महत्वाकांक्षा, आध्यात्मिकता, उसके कला कौशल में प्रकृति के साथ पूर्णतया अभिव्यक्त होती हो, **प्राचीन काल से ही वास्तुकला सभी कलाओं की जननी रही हैं, यह जितना सत्य है, उतना ही सत्य यह भी है कि प्राचीनकाल से ही वास्तुकला 'कुमावत' जाति की स्थापित पहचान मानी जाती रही हैं।** कुमावत जाति के वास्तुकारों ने युगों से द्रुत विकास क्रम के साथ भवनों के निर्माण के विकास क्रम में परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए अपने आश्रयदाता की आवश्यकता के अनुसार उसकी सुरक्षा कार्य, धर्म एवं आनन्द को ध्यान में रखते हुए वास्तु शास्त्र के अनुसार योगदान देते रहे। प्रत्येक ऐतिहासिक वास्तु की उपलब्धि मोटे तौर पर दो मूलभूत सिद्धांतों से निश्चित की जा सकती है एक जो संकल्पना में अंतर्निहित है, और दूसरी जो सर्वोच्च विशिष्टता का द्योतक है। मिस्त्री (कारीगर) वास्तु में यह रहस्यमयता सभी जगह दिखाई देती हैं। यह सत्य है, वास्तुकला ना कोई पथ है। वास्तुकारों ने अपने प्रयोजन में युगो की निरन्तरता के बल पर विशेष बना दिया, जिस तरह से बदलते फैशन में किसी महिला की पोशाक का कोई संबंध नही इसी तरह वास्तुकला की परिधि भी समय के साथ होती रही हैं। **तब ही तो 'कुमावत' जाति के वास्तुकारों ने समय के साथ वास्तुशास्त्र के अनुसार बनाई गई ऐतिहासिक धरोहरे आज भी विश्व के वास्तुकारों के लिए पहेली से कम नहीं है, जिसके वैभव के कारण देश-विदेश से पर्यटक खिंचे चले आते हैं।**

आज 'कुमावत इंडिया' पत्रिका इन धरोहरों के सृजनकर्ता आर्टिस्टों को श्रद्धा से नमन करती है। साथ ही यह भी अपील करती है कि हमारे पुरखों की बनाई हुई इन वास्तुकृतियों को देखने भी जायें।

चेतन धुंधारिया का जन्म दिन... **...पेज 15 से आगे**

पहनाकर स्वागत समिति द्वारा कुमावत का माला व दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर समिति के अध्यक्ष बाबूलाल ब्याडवाल ने कहा कि चेतनजी सदैव सामाजिक कार्यों के लिए तत्पर रहते हैं, मैं इनको शुभाशीष देता हूं ये जीवन पथ पर इसी तरह आगे बढ़ते रहें।

(7) श्री कुमावत क्षत्रिय सामूहिक **विवाह समिति जयपुर को 11,000 रूपये** व **अखण्ड कुमावत नारी युवा शक्ति 5000 रूपये** समाजोत्थान के लिए भेंट किये।

जन्मदिन कार्यक्रम में भाजपा जयपुर के शहर अध्यक्ष राघव शर्मा, लक्ष्मीकांत भारद्वाज प्रदेश मंत्री, अरूण चतुवर्दी पूर्व विधायक सिविल लाईंस, मोहनलाल गुप्ता पूर्व विधायक किशनपोल, शील धाभाई पूर्व महापौर नगर निगम जयपुर, विमल कुमावत पूर्व उपमहापौर, सोमकांत शर्मा, श्रवण बगडी, सुनील गौड, सुनील कुमावत सहकारिता प्रकोष्ठ, रामेश्वर बंबोरिया, रूपसिंह कारगवाल, मनोहर कुमावत, जीवराज कुमावत सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा, रमेश गैदर अध्यक्ष कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति मालवीय नगर, जयपुर, अशोक कुमावत स्वामिनी सेवा संस्था, कमलेश मारोठिया श्री कुमावत क्षत्रिय सामूहिक विवाह समिति, श्रवण कुमावत, बोदीलाल कुमावत महेश नगर मंडल ओबीसी मोर्चा, पंकज सिरोहिया, संजीव कुमावत, शंकरलाल भुरोदिया, राकेश कुमावत एडवोकेट राजस्थान क्षत्रिय कुमावत युवा शक्ति समिति जयपुर, रामप्रकाश मारवाल कुमावत क्षत्रिय विकास समिति बरकत नगर, राधेश्याम कुमावत, शंकरलाल बालोदिया वंदना फ्लावर्स, भाजपा पार्षद राजेश कुमावत, पीयूष कुमावत, संतोष बालोदिया अखण्ड कुमावत नारी युवा शक्ति ने भी कुमावत के निवास पर जाकर उनको बधाई दी। चेतन कुमावत ने जन्मदिवस पर समाजबंधुओं, विभिन्न संस्थाओं व मंडलों द्वारा किये गये सेवा कार्यों के लिए आभार व्यक्त किया।

800 करोड़ वें बच्चे का जन्म हुआ

विश्व जनसंख्या में मील का पत्थर

15 नवम्बर, 2022 को इस दुनिया की आबादी 800 करोड़ से अधिक हो गई। मनीला के डॉ. जोस फेबिला मेमोरियल हॉस्पिटल में इस प्रतिकात्मक बच्चे Vlnice Mabansag ने जन्म लिया। संयुक्त राष्ट्र ने इस घटना को मानव विकास में मील का पत्थर बताया है। बढ़ती आबादी **''आपदा है या अवसर''** यह गहन चिंतन का विषय है। पर यह तो निश्चित है कि सीमित संसाधनों पर बढ़ती आबादी से अतिरिक्त बोझ तो आया है। बढ़ते शहरीकरण, घटती कृषि भूमि व वन, बढ़ती बेरोजगारी सरकारों के लिए चुनौती से कम नहीं है।

विश्व आबादी में चीन 145 करोड़, भारत 141 करोड़, अमेरिका 33 करोड़, इण्डोनेशिया 28 करोड़, पाकिस्तान 23 करोड़, नाइजीरिया 21 करोड़, ब्राजील 21 करोड़ का योगदान है। यद्यपि विश्व की जनसंख्या वृद्धि दर घट रही है। यह वर्ष 1962-65 में जहां 2.1 प्रतिशत थी वहीं वर्ष 2020 में 1.05 प्रतिशत तथा वर्ष 2022 में 0.84 प्रतिशत रह गयी है। विश्व की इस जनसंख्या में 31 प्रतिशत इसाई, 23 प्रतिशत मुस्लिम, 15 प्रतिशत हिन्दु, 7 प्रतिशत बौध तथा शेष अन्य हैं।

विश्व जनसंख्या में चीनी 18.47 प्रतिशत तथा भारतीय 17.70 प्रतिशत हैं। यदि जनसंख्या वृद्धि दर को देखें तो चीन 0.39 प्रतिशत तथा भारत 0.99 प्रतिशत है। यह वृद्धि दर पाकिस्तान में 1 प्रतिशत, बांग्लादेश में 1.01 प्रतिशत, नेपाल 1.85 प्रतिशत, श्रीलंका 0.42 प्रतिशत है।

कहां गये वो दिन... **शेष पृष्ठ 18 से आगे**

खो-खो : इस खेल में दो टीमें होती हैं। एक टीम रनिंग करती है और दूसरी चेज। चेज करने वाली टीम के 9 खिलाड़ी सीमित दूरी पर एक-दूसरे के विपरीत मुंह करके बैठते हैं। अगली कड़ी में रेफ्री की सीटी बजते ही रनिंग टीम के खिलाड़ी एक-एक करके मैदान के अंदर आते हैं, जिन्हें चेज करने वाली टीम के खिलाड़ियों को एक निर्धारित समय के भीतर आउट करना होता है। बारी-बारी से दोनों टीमों को रनिंग करने का मौका मिलता है। इसमें जो ज्यादा खिलाड़ियों को आउट करता है, वह विजेता बनता है।

लंगड़ी टांग: रस्सी कूद की तरह इस खेल को भी ज्यादातर लड़कियां ही खेलना पसंद करती है। इसमें चॉक या लाल पत्थर की मदद से विशेष आकृति के छोटे-छोटे डिब्बे बनाए जाते हैं। फिर चपटे पत्थर को इन डिब्बों में पैर की मदद से डालना होता है, वो भी बिना लाईन को छुए हुए। अंत में एक पैर पर खड़े रहकर इसे एक हाथ से बिना लाइन को छुए उठाना पड़ता है। इस खेलने को खेलने के दूसरे तरीके भी हो सकते हैं। निर्भर करता है कि हम कहां खेल रहे हैं और कितने लोग खेल रहे हैं।

कंचे: यह खेल आज भी गांवों में खेला जाता है। कंचे का खेल पूरी तरह से बच्चों की जिंदगी से गुम नहीं हुआ हैं, लेकिन पहले जितने लोकप्रिय नहीं रहा। इसको खेलने के लिए छोटी-छोटी गोलियों का प्रयोग होता है। इस खेल को खेलने के इतने तरीके हैं कि बताना मुश्किल होता है, कौन सा ज्यादा लोकप्रिय है। फिर भी ज्यादातर एक को अंगुली की मदद से दूसरी पर निशाना लगाने का तरीका ज्यादा पसंद किया जाता है।

खेल का नियम कुछ ऐसा होता है कि गोली पर निशाना लगाने वाले को हर सही निशाने पर दूसरा खिलाड़ी एक गोली देनी होती है। अंत में जो ज्यादा गोलियां जीतता है, वह इस खेल का किंग कहलाता है।

रस्सा-कस्सी : यह खेल दो टीमों के बीच खेला जाता है। इसमें दोनों टीमें एक रस्सी के दोनों सिरों को पकड़कर रखती हैं। दोनों टीमों के बीच जमीन पर एक लाइन खिची होती है। नियम के अनुसार जो टीम ज्यादा जोर रखती है वह दूसरी टीम को अपने पाले पर ले आता है। इसी के साथ वह विजेता बनती है।

सितोलिया (पिट्ठू खेल) : एक समय था जब पिट्ठू का खेल बच्चों में बहुत लोकप्रिय हुआ करता था। इस खेल में दो टीमें होती हैं, एक बॉल होती है, और सात चपटे पत्थर, जिन्हें एक के ऊपर एक रख दिया जाता है। एक खिलाड़ी बॉल से पत्थरों को गिराता है। अब एक टीम का टास्क है कि वो इन पत्थरों को फिर से एक दूसरे के ऊपर रखे, और दूसरी टीम को बॉल मारकर इन्हें रोकना होता है। अगर पत्थर रखते समय खिलाड़ी को बॉल छू जाती है, तो वो खिलाड़ी खेल से आउट हो जाता है। एक बात और इस खेल को कितने भी खिलाड़ी खेल सकते हैं। बस दोनों टीमों में खिलाडियों की संख्या बराबर रखनी होती है।

आप भी बचपन के इन खेलों को एक बार फिर अपनी जिन्दगी में शामिल करें। खेल खेलने के कई फायदे हमारे शरीर पर होते हैं। खेल खेलने से हमारा शरीर चुस्त-दुरूस्त और स्वस्थ रहता है। एरोबिक एक्सरसाइज होती है, जिससे हॉर्ट या सांस संबंधित बीमारी की संभावना कम होती है। शरीर में खून का संचार भी अच्छी तरह होता है और दिल लंबी उम्र तक स्वस्थ रहता है। जीतना और हारना खेल का हिस्सा माने जाते हैं इसलिये बचपन के ये खेल गीता के किसी सार से कम न थे जिनसे हमें अपने कई सवालों के जवाब मिल जाते थे तो क्यों न एक बार फिर उन खेलों की ओर रूख किया जाये। माना नई चीजों के मुकाबले पुरानी चीजों का इस्तेमाल कम हो जाता है पर फुर्सत के पलों में एक बार फिर उस दौर को याद करके देखियेगा जो कभी गया ही नहीं बस हम उसे भूल गये हैं।

-जयसिंह कुमावत, सह सम्पादक कुमावत इंडिया पत्रिका

फ्री सिलाई मशीन योजना 2022

प्रधानमंत्री नि:शुल्क सिलाई मशीन योजना 2022 के अंतर्गत केंद्र सरकार द्वारा हर राज्य में 50000 के अधिक महिलाओं को नि:शुल्क सिलाई मशीन प्रदान की जाएगी।

इस योजना के ज़रिये देश की महिलाओं को रोजगार के लिए प्रेरित करना और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और सशक्त बनाना है। इस योजना के तहत आवेदन करने वाली महिलाओं की आयु 20 से 40 वर्ष होनी चाहिए।

श्रमिक महिलाओं के पति की वार्षिक आय 12000 रूपये से अधिक नहीं होनी चाहिए।

देश की आर्थिक रूप से कमज़ोर महिलायें ही प्रधानमंत्री नि:शुल्क सिलाई मशीन योजना 2022 के तहत पात्र होंगी।

देश की विधवा और विकलांग महिलाये भी इस योजना का लाभ उठा सकती है।

फ्री सिलाई मशीन योजना 2022 का उद्देश्य : नि:शुल्क सिलाई मशीन योजना 2022 का मुख्य उद्देश्य देश की आर्थिक रूप से कमज़ोर महिलाओं को केंद्र सरकार द्वारा मुफ्त में सिलाई मशीन प्रदान करना। प्रधानमंत्री नि:शुल्क सिलाई मशीन योजना, 2022 के ज़रिये श्रमिक महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करना जिससे वह घर बैठे सिलाई करके अच्छी आमदनी इकठ्ठा कर सकेंगी। इस के ज़रिये श्रमिक महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाना और इस योजना से ग्रामीण महिलाओ की स्थिति में भी सुधार आएगा।

प्रधानमंत्री नि:शुल्क सिलाई मशीन योजना 2022 के अंतर्गत केंद्र सरकार द्वारा हर राज्य में 50000 के अधिक महिलाओं को नि: शुल्क सिलाई मशीन प्रदान की जाएगी। इस योजना के ज़रिये श्रमिक महिलायें नि:शुल्क सिलाई मशीन प्राप्त करके अपना और अपने परिवार का भरण पोषण अच्छे से कर सकेंगी। इस योजना के अंतर्गत देश की जो इच्छुक महिलायें फ्री सिलाई मशीन लेना चाहती है उन्हें इस योजना के तहत आवेदन करना होगा। E Shram Card डाउनलोड करने के लिए क्लिक करें

महत्वपूर्ण निर्देश : लाभार्थियों को सिलाई मशीन की राशि, ट्रेडमार्क, सोर्स तथा खरीद की तिथि से संबंधित जानकारी प्रदान करनी होगी। इस योजना का लाभ केवल एक बार ही प्राप्त किया जा सकता है। इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए महिला न्यूनतम एक वर्ष से पंजीकृत होनी चाहिए।

योजना निम्न क्षेत्रों के लिए है : इस योजना को इस समय केवल कुछ ही राज्यों में लागू किया गया है जैसे हरियाणा ,गुजरात ,महाराष्ट्र ,उत्तर प्रदेश ,कर्नाटक, राजस्थान, मध्य प्रदेश ,छत्तीसगढ़ ,बिहार आदि और और समय बाद इस योजना को पुरे देश में लागू कर दिया जायेगा।

पीएम सिलाई मशीन स्कीम के तहत वांछित दस्तावेज़ : आवेदिका का आधार कार्ड, आयु प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र, पहचान पत्र, यदि विकलांग है तो विकलांग चिकित्सा प्रमाण पत्र, यदि कोई महिला विधवा है तो उसका निराश्रित विधवा प्रमाण पत्र, सामुदायिक प्रमाण पत्र, मोबाइल नंबर तथा पासपोर्ट साइज फोटो

प्रधानमंत्री नि:शुल्क सिलाई मशीन योजना 2022 में आवेदन कैसे करे ? : इस योजना के अंतर्गत जो इच्छुक श्रमिक महिलाए आवेदन करना चाहती है तो उन्हें सर्वप्रथम भारत सरकार की www.india.gov.in पर जाना होगा। Official Website पर जाने के बाद आपको वहाँ से आवेदन फॉर्म को डाउनलोड करना होगा। आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बाद आवेदन फॉर्म में पूछी गयी सभी जानकारी जैसे-नाम, पता, मोबाइल नंबर, आधार नंबर आदि भरना होगा। सभी जानकारी भरने के बाद आपको अपने सभी दस्तावेज़ों को फोटो कॉपी को अपने आवेदन फॉर्म से अटैच करके अपने सम्बंधित कार्यालय में जाकर जमा करना होगा।

इसके बाद आपके आवेदन पत्र को कार्यालय के अधिकारी द्वारा सत्यापन किया जायेगा। सत्यापन करने के बाद आपको नि:शुल्क सिलाई मशीन प्रदान की जाएगी।

कुमावत समाज की बालाजी लाइब्रेरी का शुभारम्भ

कुमावत समाज सामुहिक विवाह एवं विकास समिति, बन्धे बालाजी, उगरियावास, जयपुर ने समिति भवन परिसर में 'बालाजी लाइब्रेरी' का 1 नवम्बर, 2022 को शुभारम्भ किया है। इस समिति के अध्यक्ष श्री पन्नालाल कुमावत, कोषाध्यक्ष श्री भींवाराम कुमावत तथा शिक्षा समिति अध्यक्ष श्री सीताराम कुमावत हैं। इसकी सदस्यता शुल्क मात्र 350 रुपए मासिक है तथा प्रात: 10.00 से दोपहर 1.00 बजे तक यह खुली रहेगी।

इस लाइब्रेरी में वातानुकूलित व स्वच्छ वातावरण, आरामदायक फर्नीचर, फ्री वाई-फाई, CCTV कैमरे, केन्टीन, शुद्ध पेयजल, नि:शुल्क पार्किंग, बालक-बालिकाओं के लिए पृथक व्यवस्था के साथ कैरियर काउंसलिंग एवं गाइडेंस, ग्रुप डिसक्शन तथा विशेषज्ञों द्वारा परामर्श की सुविधा भी दी जायेगी।

समाज में शिक्षा के विस्तार तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए समिति का यह नवाचार प्रशंसनीय है।

इन्हें भी आजमाइये

दाल

दाल बनाते समय कूकर की सीटी आने पर दाल का पानी कूकर के बाहर आ जाता है। यदि दाल के साथ आधा चम्मच घी डालें तो कूकर से दाल का पानी बाहर नहीं आयेगा। मूंग और उड़द दाल बनाने से पहले उसमें एक टी स्पून मक्खन डालेंगे तो दाल का स्वाद बढ़ जाता है।

- **दाल की बड़ी :** यदि बड़िया बनाने के लिए दाल में एक दिन पहले हींग डालकर पीसे तो बड़ियां खस्ता बनती है।

दही बड़े

- इसके लिए दाल की पिट्ठी कड़ाई में तलने से पहले तेल/घी गर्म करके उसमें थोड़ा गेहूं का आटा डालें फिर इसे तले तो पिट्ठी नर्म बनेगी और तलते समय चिपकेगी भी नहीं।
- दही बड़े के लिए मूंग व उड़द की दाल की पिट्ठी बनाने से पहले एक बड़ी चम्मच मैदा मिलाकर फेट लें, इससे वह गोल व सफेद बनेगा।

पनीर

- घर पर पनीर बनाते हैं तो दानेदार बनता है। इसके लिए पनीर को कपड़े में डालकर ठण्डे पानी में डूबो दें तो इसमें दानें नहीं पड़ेंगे।
- पनीर को फ्रीज में रखें तो पानी डालकर रखे, पानी को बदलते रहें, इससे यह अधिक समय तक खराब नहीं होगा।

प्याज

- प्याज छीलते व काटते समय आंखों में जलन होती है, इससे बचाव के लिए एक आलू छीलकर चाकू की नोक पर लगा लें, फिर प्याज काटे।
- यदि प्याज कुछ देर अधिक ठण्डे पानी में रख दें इसके बाद उसे काटे तो आंखों में पानी नहीं आयेगा।
- प्याज को भूनते समय उसमें मामूली नमक डालने पर इसका रंग गुलाबी हो जायेगा।

मेथी

हरी मेथी की पत्तियों की भुजिया बनाकर खाने से पेट में वायु विकार में लाभ होता है। दाना मेथी को रात को भीगोकर उसका पानी सुबह पीने से पेट के रोगों में लाभ होता है। भीगी हुई दाना मेथी को अंकुरित करके खाने से गठिया , वात, घुटने के दर्द आदि में आराम मिलता है। भूख कम लगने पर मेथी में घी डालकर लाल होने तक सकेंगे। फिर ठण्डी होने पर इसे पीस लें तथा शहद डालकर कुछ दिन खाने से भुख खुलकर लगेगी। प्रसूतिकाल में मेथी का सेवन करने से भुख अच्छी लगती है, दस्त साफ आता है तथा गर्भाशय ठीक रहता है। प्रसव बाद इसका सेवन करने से स्तनों में दूध आने तथा हार्मोन्स की कमी ठीक होती है। मेथी की सब्जी खाने पर अपच व कब्ज ठीक होती है व बाल सफेद होने से रुक जाते हैं। मेथी के लड्डूओं का सेवन करने से दुर्बलता, शरीर की पीड़ा तथा थकान में यह टॉनिक का कार्य करता है।

कढ़ी

- कढ़ी में करीपत्ता डालने से उसका स्वाद बढ़ जाता है।
- कढ़ी में करीपत्ता और मिर्च बांधकर डालिए, इससे आपको बच्चों को कढ़ी देने में सुविधा रहेगी
- एक बार कढ़ी में बेसन के स्थान पर कार्न फ्लोर प्रयोग में लोकर देखें, आप बार-बार कॉर्न फ्लॉर वाली कढ़ी ही खाना चाहेंगी।
- कढ़ी में बेसन के स्थान पर अरहर की दाल भी प्रयोग में लाई जा सकती है।

पुलाव

- पुलाव बनाना हो, तो चावल कुछ देर पहले धोकर पानी निथारकर कर रखें। पकाने से पूर्व चुटकी भर हल्दी लेकर धुले चावलों को लगाकर पुलाव बनाएं, पुलाव का रंग अच्छा आएगा।
- लाल कसी हुई गाजर पुलाव में डालिए, पुलाव में केसरिया रंग निखर आयेगा।
- आधे पके पुलाव में यदि एक चम्मच शक्कर डाल दी जाये, तो वह दाना-दाना खिल उठेगा।

चावल

- बनाने से पहले चावलों को यदि नमक मिले पानी में भिगोकर रखा जाए तो वे सफेद बनेंगे।
- चावल खिले-खिले बनें, इसके लिए तैयार चावलों के बर्तन पर गीला कपड़ा बिछाकर उन्हें दस मिनट के लिए प्लेट से ढक दें।
- तैयार चावलों के ऊपर एक टुकड़ा ब्रैड का रख देने से वह टुकड़ा अतिरिक्त नमी सोख लेगा और चावल खिले-खिले बनेंगे।
- जब चावल पकने के लिए तैयार हो जाएं, तो कुछ बूंदे नीबू के रस की उनमें डाल दें, चावल खिले और सफेद बनेंगे।
- चावल बन कर तैयार हो जाएं तो उनमें एक चम्मच घी डाल दें, वे सुंगधित हो जाएंगे।

उदयपुर में युवक-युवती परिचय सम्मेलन 18 दिसम्बर को

कुमावत समाज पांचखेड़ा संस्थान, उदयपुर के तत्वावधान में युवक-युवती परिचय सम्मेलन रविवार, 18 दिसम्बर, 2022 को महासभा भवन हरिदास की मगरी, मल्लातलाई, उदयपुर में आयोजित किया जा रहा है।

विवाह एवं ज्योतिष : नाड़ी दोष एक विवेचन

विवाह संबंध करने से पूर्व गुण मिलान में नाड़ी को सर्वाधिक महत्व प्राप्त है। इसे सबसे अधिक अंक 36 में 8 प्राप्त हैं। नक्षत्रों के आधार पर नाड़ी चक्र का निर्माण किया जाता है। यदि वर व कन्या का नक्षत्र एक नाड़ी में पड़े तो नाड़ी दोष हो जाता है तथा इससे प्राप्य आठ अंक काट लिये जाते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि नाड़ी दोष एवं शेष सात कूट मिलते भी हों तो वे निष्प्रयोजन हो जाते हैं।

ज्योतिष में 3 नाड़ियां बताई गई हैं (1) आदि (2) मध्य (3) अन्त्य। यदि वर व कन्या के जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़े तो वह नाड़ी दोष दाम्पत्य सुख का नाशक होता है तथा सन्तान सुख में भी बाधक होता है। ऐसा विवाह सदैव अशुभ होता है। वराहमिहिर ने आदि नाड़ी में दोनों के नक्षत्र होने से वियोग, मध्य नाड़ी में मृत्यु एवं अन्त्य नाड़ी में अत्यन्त दु:ख व वैधव्य कहा है।

आद्येकनाड़ी कुरूते वियोगं मध्याक्ष्यनाड्यामुभयोर्विनाशम्।
अन्त्ये च वैधव्यमतीवदु:खं तस्माच्च विस्त्र: परिवर्जनीया:।।

(वराहमिहिर)

नाड़ी दोष का परिहार निम्न स्थितियों में हो जाता है:-

i. यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशियां भिन्न हों। जैसे कृतिका नक्षत्र में प्रथम चरण एवं शेष तीनों चरणों में नक्षत्रैक्य होने पर भी राशि भेद है अर्थात मेष एवं वृक्ष राशि।

ii. एक राशि के भिन्न नक्षत्रों में जन्म होने पर नाड़ी दोष नहीं रहता जैसे स्वाति व विशाखा नक्षत्र में एक राशि होने पर भी नक्षत्र भेद रहता है।

iii. दोनों का नक्षत्र एक होने पर चरण अलग-अलग हों तब भी नाड़ी दोष नहीं होगा। **(नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्)**

नाड़ी दोष एक ऐसा महादोष है जिसका नाम सुनकर ही लोग डर जाते हैं लेकिन आजकल पंचांगों में मेलापक सारिणी दी होती है। उसमें एक नाड़ी होने पर 3 का अंक लिख दिया जाता है। अर्थात् अत्यन्त साधारण नियमों के आधार पर बिना अपवाद के, ये सारणियां बनाई जाती हैं। परीक्षा हेतु किसी भी एक मेलापक सारिणी को देख लीजिए। वहां चरण भेद, राशिभेदादि पूर्वोक्त प्रसिद्ध परिहारों का भी प्रयोग सारिणी निर्माण में नहीं किया जाता है।

कुछ विद्वान कहते हैं कि यह दोष केवल ब्राह्मण वर्ण पर ही लागू होता है। इसी आधार पर ही लोग कहते हैं कि वे ऐसा करते भी हैं कि केवल नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए वर्जित है। शेष वर्णों में नाड़ी दोष होने पर भी वे दोष नहीं मानते हैं व विवाह सम्बन्ध की आज्ञा दे देते हैं।

यह समझ नहीं आता कि यह नाड़ी दोष केवल ब्राह्मणों को ही क्यों कष्टप्रद होगा? विष तो विष है, यदि ब्राह्मण खाए तो घातक होगा और क्षत्रिय खाए तो वह पुष्टिवर्धक कैसे हो सकेगा?

ऐसी स्थिति में नाड़ी यदि विचारणीय है तो जाति वर्ण विशेष के लिए नहीं, अपितु सबके लिए होगी।

- राजेन्द्र प्रसाद खोरानिया, ज्योतिर्विद

प्रेम विवाह के ज्योतिषीय सूत्र

प्रेम विवाह- 'शुक्र ग्रह' को प्रेम तथा विवाह का कारक माना गया है। स्त्री की कुंडली में 'मंगल ग्रह' प्रेम का तथा गुरु को विवाह का कारक माना गया है।

प्रेम विवाह के ज्योतिषीय सिद्धांत -

- पंचम भाव प्रेम का भाव और सप्तम भाव विवाह का है, अत: जब पंचम भाव का सम्बन्ध सप्तम भाव भावेश से होता है तब प्रेमी-प्रेमिका वैवाहिक सूत्र में बंधते हैं।
- पंचमेश-सप्तमेश-नवमेश तथा लग्नेश का किसी भी प्रकार से परस्पर सम्बन्ध हो रहा हो तो जातक का प्रेम, विवाह में परिणत होता है ! यदि अशुभ ग्रहो का भी सम्बन्ध बन रहा हो तो वैवाहिक समस्या आएगी।
- प्रेम और विवाह के कारक ग्रह शुक्र या मंगल का पंचम तथा सप्तम भाव-भावेश के साथ सम्बन्ध होना भी विवाह कराने में सक्षम होता है।
- सभी भावो में नवम भाव महत्वपूर्ण है नवम भाव का परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सम्बन्ध होने पर माता-पिता का आशीर्वाद मिलता है और यही कारण है की नवम भाव -भावेश का पंचम- सप्तम भाव भावेश से सम्बन्ध बनता है तो विवाह भागकर या गुप्त रूप से न होकर सामाजिक और पारिवारिक रीति-रिवाजो से होती है।
- शुक्र अगर लग्न स्थान में और चन्द्र कुण्डली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है तब भी प्रेम विवाह संभव होता है।
- नवमांश कुण्डली जन्म कुण्डली का सूक्ष्म शरीर माना जाता है अगर कुण्डली में प्रेम विवाह योग नहीं है या आंशिक है और नवमांश कुण्डली में पंचमेश, सप्तमेश और नवमेश की युति होती है तो प्रेम विवाह की संभावना प्रबल हो जाती है।
- पाप ग्रहो का सप्तम भाव-भावेश से युति हो तो प्रेम विवाह की सम्भावना बन जाती है।
- राहु और केतु का सम्बन्ध लग्न या सप्तम भाव-भावेश से हो तो प्रेम विवाह का सम्बन्ध बनता है।
- लग्नेश तथा सप्तमेश का परिवर्तन योग या केवल सप्तमेश का लग्न में होना या लग्नेश का सप्तम में होना भी प्रेम विवाह करा देता है।
- चन्द्रमा तथा शुक्र का लग्न या सप्तम में होना भी प्रेम विवाह की ओर संकेत करता है।
- सप्तमेश का नवमेश से योग किसी भी केंद्र में हो तथा बुध, गुरु अथवा शुक्र में से कोई भी या सभी उच्च राशि गत हो तो दाम्पत्य जीवन बहुत ही मधुर होता है !

डॉ योगेश , ज्योतिषाचार्य, मानसरोवर, जयपुर।
website- www.astrologeryogesh.com

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, जोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोरिया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर

विशिष्ठ संरक्षक

वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल टोंक फाटक, जयपुर
वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर
वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोड़ाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मॅडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, किशन मानपुरा, भदाल, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, डोढसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास
वि/143 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

21 अक्टूबर श्रीमती अभियादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री कानाराम जी शिवगंज, सिरोही
22 अक्टूबर श्री छीतरमल ठेकेदार प्रेम नगर, झोटवड़ा, जयपुर
25 अक्टूबर श्रीमती ग्यारसी देवी लोहरवाड़िया, जयपुर
25 अक्टूबर श्री विष्णु नराणिया, नगर परिषद के पास, ब्यावर, अजमेर
26 अक्टूबर श्रीमती बदामी देवी, धर्मपत्नी स्व. श्री कैलाश किरोड़ीवाल, इन्दौर
27 अक्टूबर श्रीमती सरस्वती देवी पत्नी श्री भैरूलाल मारोठिया, झोटवाड़ा, जयपुर
28 अक्टूबर श्री बाबूलाल जी निमीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
29 अक्टूबर श्रीमती पन्नी बाई धर्मपत्नी श्री कानजी मारवाल, ब्यावर, अजमेर
30 अक्टूबर श्री मोहनलाल माचीवाल निवासीफतेहलाल नगर, किशनगढ़, अजमेर
2 नवम्बर श्रीमती रुकमणी देवी, विराजपुरा बस्सी, जयपुर
2 नवम्बर सुश्री मोनिका पुत्री श्री संतोश कुमार मारवाल, मुरलीपुरा, जयपुर
2 नवम्बर श्री सुन्दर लाल पीपलोदा, कालू बाबाक की ढाणी, हाथोज, जयपुर
3 नवम्बर श्री लक्ष्मीनारायण सिरसवा शास्त्री नगर, जयपुर
3 नवम्बर श्री छोटेलाल देवतवाल, प्रेमनगर द्वितीय, गुर्जर की थड़ी, जयपुर
4 नवम्बर श्री मोहनलाल मारवाल, अशोक विहार, मानसरोवर, जयपुर
5 नवम्बर श्रीमती ललित देवी, धर्मपत्नी वैद्य श्री मोहन लाल तूंदवाल, चौमूं,ज यपुर
8 नवम्बर श्री सौरभ वर्मा सुपुत्र स्व. बालूराम जी वर्मा, सिविल लाईन, जयपुर
10 नवम्बर श्रीमती दुर्गादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री केसरलाल जी उदयवाल, सांगानेर
11 नवम्बर श्रीमती पार्वती देवी धर्मपत्नी कैलाश चन्द छाबल्या, सांगानेर
11 नवम्बर श्री चौथमल जी कुमावत डूंगरसी काबास, करणसर
11 नवम्बर श्रीमती मोहिनी देवी, रंगोली गार्डन, वैशाली नगर, जयपुर
12 नवम्बर श्री गुलशन जलांधरा पुत्र श्री अमर चन्द, न्यू सांगानेर रोड, जयपुर
15 नवम्बर श्री हरिप्रसाद वर्मा पुत्र स्व. श्री राधेश्या घोड़ेला बनीपार्क, जयपुर
16 नवम्बर श्री लालूराम घोडावड, निमाज (पाली)
16 नवम्बर श्री गणेश लाल सिरस्वा, गजसिंहपुरा, जयपुर
16 नवम्बर श्री सेडूराम दम्बीवाल, चौमूं
16 नवम्बर श्री राजेश बारावाल चौमूं
17 नवम्बर श्रीमती सोनी देवी छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
हिमांशु	BCA, Msc(CS)	Business	26.10.94	5'8''	जायलवाल	कैकट्या	मारोठिया	बनावडिया	8279240956	ब्यावर
कमलेश	B.A. (1st year)	Kerana Shop	11.10.2000	5'10''	पारमवाल	गठेलवाल	किरोड़ीवाल	जलान्धरा	9982168271	जयपुर
विशाल	BBA	-	31.05.97	5'7''	मोरवाल	सुखडिया	छापरवाल	अडानिया	7023746797	चित्तौड़गढ़
सचिन(मांगलिक)	B.Tech.(Math)	Private Job	26.5.92	5'10''	मारवाल	देवतवाल	तूंदवाल	गैदर	9351965363	जयपुर
निखिल	B. Tech. (CS)	Private (Noida)	29.3.97	5'7''	मारोठिया	राजोरा	घोड़ेला	कुदाल	9571194100	किशनगढ़
हर्षित	B. Tech. (Civil)	Business (Road Cont.)	26.11.91	5'6''	सुखाड़िया	नेहरा	अडानिया	धनेरिया	9414170661	नाथद्वारा
अतुल	B.Com Event dip.	Work shop & Event manag.	3.9.96	5'10''	जलान्धरा	नागा	आसीवाल	दम्बीवाल	9414056410	जयपुर
मोहित	BA	Pvt. Ltd. (Manager)	13.4.95	5'7''	ब्याड़वाल	अनावड़िया	राजोरी	कंडेरीवाल	9351258443	जयपुर
पुनीत	M.Com.	Dupeuty manager LIC	20.11.92	5'4''	माचीवाल	काम्या	मनेठीवाल	मामोडिया	9799286300	जयपुर
डॉ. ज्वेनीष	BDS	HSE	11.12.91	5'7''	गहलोत	–	परमार	–	www.instumexindia.com	मुम्बई
नवीन	B.A.	Vidio, Pohotography	15.12.95	5'8''	नियाणीया	बालोदिया	देवतवाल	कुदीवाल	9828024061	जयपुर
पुनीत	M.A. Music dip.	Musiceion	19.4.89	5'8'	बहरा	खरगटा	मारवाल	बसवाल	9828068755	जयपुर
प्रदीप	M.Com.	HDFC Bank	10.12.91	5'4''	कैकटया	अनावडिया	गुडीवाल	भौरोदिया	9929872004	जयपुर
लोकेश	M.Com.	Dead writer	9.9.92	5'7''	कुदीवाल	लोहरवाडिया	मारवाल	जलान्दरा	856280981	जयपुर
हेमराज	M.A.	Graphic Designer	2.12.90	5'7''	राजोरिया	मालिया	गोठवाल	जहाजपुरा	9928210984	जयपुर
संतोष	B.Com., ITI (Elect)	इलेक्ट्रिशियन	21.12.94	5'4''	राहोरिया	आसीवाल	राजोरा	धुंधारिया	9413395996	जयपुर

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
सरीता	Master Dgree	Bank of Germany (Pune)	21.3.93	5'2''	लवानिया	कारगवाल	भाटीवाल	बींवाल	9933239732	झुंझुनूं
मनीषा	M.Com. (ABST)	-	14.7.93	5'3''	बबेरवाल	माचीवाल	देवतवाल	सिरस्वा	9828590772	जयपुर
सोनल	B.A., B.Ed. MBA	-	9.10.92	-	तुंनवाल	दम्बीवाल	केलुगरिया	बबेरवाल	9413271867	भीलवाड़ा
तरुण	B.Sc., B.Ed.	-	6.4.97	5'4''	मामोडिया	थांवला	जलान्धरा	जालवाल	9414017535	जयपुर
वीनीता	M.A.	-	14.6.96	5'0''	अनावडिया	जायलवाल	–	नेमीवाल	9462497055	जोधपुर
ट्वींकल	MCA	Pvt. IT Co.	3.10.92	5'4''	केकटिया	मण्डेलिया	बनावडिया	बेरा	9828313182	उदयपुर
अंकिता	M.A.	-	11.11.95	-	बालोदिया	सोनवाल	कन्नोजिया	लच्छीविया	7676794362	भीलवाड़ा
नन्दीनी	M.A.,RSCT	-	14.6.2000	5'8''	किरोड़ीवाल	जेठीवाल	देवतवाल	काम्या	9414314380	फुलेरा
रसाधीका	M.A., B.Ed.	-	26.8.98	5'3/2''	मारवाल	बालोदिया	मुडोलिया	किरोड़ीवाल	9799010380	जयपुर
मोनिका(मांगलिक)	B.A.	-	15.8.95	5'6''	रतीवाल	किरोड़ीवाल	मोरवाल	सिरस्वा	9413994746	अजमेर
सुरभी	B.com. MBA	HR manager	17.12.92	5'4''	जूनवाल	दौराया	सिरस्वा	खरकटा	9414045277	जयपुर
कुसुम	BCA	-	26.3.95	5'2''	टॉक	दुबल्दिया	गोठवाल	गुगान	9460585056	ब्यावर
रविना	M.Com.	-	21.12.94	5'3''	खनारिया	कुदाल	माल	कुंडलवाल	9414450932	जयपुर
दिव्या	B.Tech.	-	29.6.91	5'3''	भौरोदिया	छाबल्या	खोवाल	खाटूवाल	8947992776	जयपुर
मोनिका	MBA	Pvt. service	12.10.95	5'8''	दौराया	बधानिया	जूनवाल	घोड़ेला	9782886808	जयपुर
सिमरण	B.Sc., GNM	GNM, JLN Hospital Ajmer	12.5.96	5'4''	गैदर	मारवाल	बबेरीवाल	खरज्टा	8003874100	पीसांगन
ज्योति	M.A., B.Ed.	Ist Grade Teacher(Govt)	8.2.94	4'11''	अनावड़िया	धुंधारिया	छाबल्या	गलचानिया	9929086238	जयपुर

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है। नवीनतम अपेडेट जानकारी हेतु कृपया व्यक्तिगत सम्पर्क करें।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

समाज बन्धुओं से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु यदि आप प्रकाशन सामग्री:- समाचार, फोटो, लेख, कविता, प्रतिभाओं का परिचय, सामाजिक गतिविधियों, जनउपयोगी सूचना आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया kumawatindiapatrika @gmail.com पर मेल करें अथवा कार्यालय पते पर सामग्री प्रेषित करें।

-सम्पादक

आवश्यक सूचना

पत्रिकाएं नियमित रूप से हर माह की 25 तारीख को जयपुर से निर्धारित डाकघर में भेज दी जाती हैं। यदि किसी सदस्य को एक सप्ताह के अन्दर पत्रिका नहीं मिलती है तो आप अपने पोस्टमैन व पोस्ट मास्टर से शिकायत करें एवं हमें भी सूचित करें।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में नि:शुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

सदस्यता समाप्ति सूचना

3 वर्षीय सदस्यता वाले सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री चन्द्रप्रकाश अजमेरा मो. 9928088815
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **बरकत नगर-महेश नगर**-श्री विशाल कम्प्यूटर्स, बरकत नगर महेश नगर फाटक के पास, जयपुर, मो. 94613-43432
13. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
14. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
15. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
16. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

मिट्टी के गणेश बनाने की प्रतियोगिता कनिष्का कुमावत सम्मानित

दैनिक भास्कर द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति स्कूली स्टूडेन्ट्स को पिछले कई वर्षों से जोड़ने का कार्य कर रहा है, इसके तहत 'मेकिंग ऑफ मिट्टी के गणेश' बनाने विसर्जन घर पर ही करने का संदेश देकर स्वच्छ व संरक्षित पर्यावरण में सहयोग दे रहा है।

इस वर्ष 8 प्रमुख शहरों में इन्टर स्कूल प्रतियोगिता कराई गई जिसमें 5वीं से 8वीं कक्षा तथा 9वीं से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इन श्रेणियों में 5-5 विद्यार्थियों का चयन किया गया, 5वीं से 8वीं कक्षा श्रेणी में रावत सी. सैकण्डरी स्कूल जयपुर की छात्रा कनिष्का कुमावत पुत्री अमित वर्मा को भी दैनिक भास्कर कार्यालय में 8 नवम्बर को बुलाकर सम्मानित किया गया। **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से बधाई।

यूजीसी नेट परीक्षा के साथ जूनियर रिसर्च फैलोशिप

पलसाना के भींवाराम कुमावत पुत्र श्री नागरमल कुमावत जो महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय पलसाना में अध्यापक पद पर कार्यरत हैं, ने यूजीसी नेट परीक्षा 2022 में प्रथम प्रयास में 98.25 परसेंटाइल के साथ जूनियर रिसर्च फेलोशिप (JRF), राजनीति विज्ञान के लिए क्वालीफाई किया है । स्नातक में बायोलॉजी के विद्यार्थी रहे भींवाराम कुमावत द्वारा राजनीति विज्ञान में JRF क्वालीफाई किया है, **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से बधाई।

लक्की का राष्ट्रीय स्तर पर चयन

बगरू। दिल्ली में आयोजित 41वें नॉर्थ जोन चैंपियनशिप में शूटिंग क्लब से बगरू निवासी लक्की पुत्र कैलाशचंद कुमावत ने निशानेबाजी में नेशनल क्वालीफाई कर बगरू का गौरव बढ़ाया है। अब लक्की केरल में होने वाले ऑल इंडिया शूटिंग चैंपियनशिप में भाग लेंगे। **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामना।

श्रद्धांजलि

स्व. श्री गुलाब चन्द बालोदिया

(Retd. Director of Postal Accounts)

पुत्र स्व. श्री विजय लाल बालोदिया की

पंचम पुण्य तिथि

10 नवम्बर, 2022 पर हार्दिक श्रद्धांजलि

आपका मिलनसार, संघर्षपूर्ण, त्यागमय एवं प्रेरणादायक आदर्श हम सभी का सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा

श्रद्धानवत

श्रीमती गायत्री देवी (धर्मपत्नी)

पुत्र-पुत्र वधू : गजेन्द्र बालोदिया-गरिमा, लोकेन्द्र बालोदिया-हनिता

पुत्री: रजनी (धर्मपत्नी स्व. डॉ. नन्दकिशोर)

पौत्र-पौत्री: हार्दिक, श्रजुल, दर्शिल, हीती

9.5.1949-10 नवम्बर, 2017

ए-1 विजय विलास, किसान मार्ग, बरकत नगर, टोंक फाटक, जयपुर-302015

मो. 9829212772, 9829009036

सी.के. हैण्डीक्राफ्टस द्वारा हस्तशिल्पियों के लिए 'हस्तशिल्प प्रोत्साहन सप्ताह' का आयोजन

कला और संस्कृति के लिए भारत दुनिया के सांस्कृतिक तौर पर समृद्ध देशों में से एक है। हमारे देश का ये सौभाग्य रहा है कि यहां बहुत कुशल एवं सिद्धहस्थ कारीगर रहे हैं। उन्होंने भारतीय हस्तशिल्प को पूरी दुनिया में मशहूर किया है। अनेक लोग आज भी कलात्मक वस्तुओं का निर्माण कर अपनी आजीविका कमाते हैं।

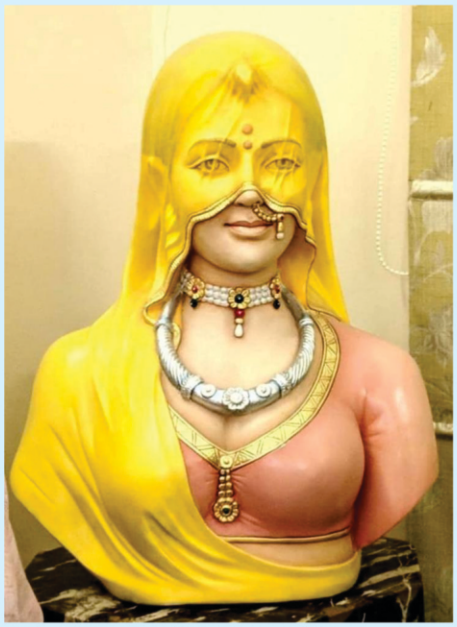

कोविड-19 महामारी के दौर में हस्तशिल्प व्यवसाय को काफी नुकसान हुआ। हस्तशिल्प उत्पादों को मार्केट और बढ़ावा देने के उद्देश्य से सी.के. हैण्डीक्राफ्टस, निर्माण नगर जयपुर द्वारा 'हस्तशिल्प प्रोत्साहन सप्ताह' दिनांक 28 नवम्बर 2022 से 5 दिसम्बर 2022 तक आयोजित किया जा रहा है।

सी.के. हैण्डीक्राफ्टस के प्रोपराइटर तनुज कुमावत ने बताया कि हैण्डीक्राफ्ट कारीगरों एवं हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित नवीन उत्पादों को मार्केट और आत्मनिर्भर भारत के लिए कदम बढ़ते हुए **'वोकल फॉर लोकल'** के उद्देश्य से इस 'हस्तशिल्प प्रोत्साहन सप्ताह' का आयोजन किया जा रहा है। जितना ज्यादा देश की जनता स्थानीय उत्पादों से अपनी जरुरत को पूरा करेगी उतना ही उत्पादों का आयात कम करना पड़ेगा। **मेक इन इंडिया** के उद्देश्य से इस 'हस्तशिल्प प्रोत्साहन सप्ताह' का आयोजन किया जा रहा है। हस्तशिल्पी स्वयं अपने नवीन उत्पादों के साथ 'हस्तशिल्प प्रोत्साहन सप्ताह' के अंतर्गत प्रतिदिन प्रात: 9 से 12 बजे तक सी.के. हैण्डीक्राफ्टस, निर्माण नगर अथवा मोबाइल नं. 9829017584 पर सम्पर्क कर सकते हैं। हस्तशिल्पी अपने उत्पादों के बारे में सुझाव व नए प्रयोगों पर भी चर्चा कर सकते हैं। चयनित उत्पादों को सीधा हस्तशिल्पियों से क्रय किया जायेगा।

।। जय श्री गणेश ।।

।। जय महाकाल ।।

हमारे प्रिय चि. प्रणय सुपुत्र श्रीमती निशा-श्री विजय जालवाल इन्दौर के जन्मदिन 1 अक्टूबर, 2020 को जयपुर, उदयपुर, पूना से 70-80 परिवारजनों के आशीर्वाद के साथ सम्पन्न हुआ

विशेष आभार : हेमचन्द खड़गटा से विशाल प्रांगण में चला नहीं गया तो इन्दौर के भामाशाह श्री दिलीप जी कुमावत सपत्नी, डॉ. विरेन्द्र लूनिया सपत्नी एवं उनके सुपुत्र, श्रीमती इन्द्रा-शशि कुमार वर्मा एवं अन्य अतिथिगण नजदीक पहुंच कुशलता जानी एवं फोटोग्राफ खिंचवाये। इस विशाल आयोजन के लिए स्व. श्री रामचन्द्र मिस्त्री के सभी परिजनों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। **सौजन्य : खड़गटा-धुंधारिया ट्रस्ट**

श्रीमती एवं श्री मनोहर लाल पत्रकार द्वारा खड़गटा का सम्मान

।। प्रथम पुण्यतिथि ।।

श्रीमती सुशीला देवी

धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीनारायण रामेश्वरजी वर्मा (किरोड़ीवाल)
निवास - दहिसर (मुम्बई), मूल निवास - दाँता रामगढ़
सुपुत्री स्व. भँवरीदेवी मुरलीधरजी खोवाल, रघुनाथगढ़ एवं
स्व. मातादीनजी सुरजमलजी घोड़ेला (गुढ़ा गौड़जी/विले पार्ले, मुम्बई)

आपकी याद निरन्तर आती रहती है, आपकी कमी हमेशा महसूस होती है।
प्रथम पुण्यतिथि पर हम सभी परिवारजन अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

11.11.1954 - 16.11.2021
जन्म : कृष्ण प्रतिपदा, मार्गशिर्ष माह, विक्रम संवत 2011
वैकुंठ गमन : कार्तिक माह, शुक्ल त्रयोदशी, विक्रम संवत 2078

श्रद्धावंत पति : लक्ष्मीनारायण रामेश्वरजी वर्मा (किरोड़ीवाल), पुत्र-पुत्रवधु : विजय - सोना, पुत्री : सुमन (वर्षा), पुत्री - जवाई : शीतल - सुशीलजी, वर्ली (मुम्बई), नमिता - गौरवजी, कलमबोली (नयी मुम्बई), दोहिता - दोहिती : जीत, किआंशा

ससुराल पक्ष : काकी सास : विमला देवी रामगोपालजी किरोड़ीवाल, मलाड़ (मुम्बई), काका ससुर - काकी सास : नेमिचन्दजी - संतरा देवी किरोड़ीवाल, मलाड़ (मुम्बई), जेठानी : रतनी देवी भँवरलालजी किरोड़ीवाल, दाँता रामगढ़, जेठ : पुरुषोत्तमजी किरोड़ीवाल, बोरीवली (मुम्बई), देवर - देवरानी : रामचंद्रजी-गीता, पालघर (मुंबई), ननद - नंदोई : स्व. शारदा बाई - बनवारीजी बबेरीवाल, इंदौर, मंजू बाई - कृष्णगोपालजी मारवाल, वापी, **स्व. डुंगालालजी नाथूरामजी किरोड़ीवाल का सम्पूर्ण परिवार, दाँता रामगढ़ एवं सुसराल पक्ष के अन्य सभी कुटुम्बजन।**

पीहर पक्ष : मासी: श्रीमती घीसीदेवी बनवारीलालजी घोड़ेला, हर्ष भोया, बहन - बहनोई : स्व. विमला देवी-सुरेन्द्रजी, पांडव नगर (दिल्ली), मीना-देवेंद्रजी, सिविल लाइंस (जयपुर), भाई-भाभी : महेशजी-मंजू, गुढा गौड़जी, स्व. किशोरजी-पुष्पा, बोरीवली (मुम्बई) एवं सभी भांजे, भांजीयाँ, भतीजे, भतीजियाँ एवं सम्पूर्ण पीहर पक्ष।

Facebook ID: sushila.varma.106 **सम्पर्क : मो. 9867325252, 9867177188**

श्रद्धांजलि

सिद्धार्थ वर्मा (घोड़ीवाल)

(पुत्र श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल)

प्रथम पुण्य तिथि 5 दिसम्बर, 2022

हम सभी परिवारजन अश्रुपूरित
श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धान्वत

पिता : मोहन कुमार, माँ : माया वर्मा, पत्नी : लक्षिका कुमावत, पुत्री : रिध्विका (राशि), भाई : कपिल कुमार भाभी : पूनम कुमावत, भतीजी : दिव्यांशी (आर्वी), भतीजा : दैविक (दक्ष)

समस्त घोड़ीवाल परिवार (कुमावत)
8/198 मालवीया नगर, जयपुर

जन्म : 16 जुलाई 1988
स्वर्गवास : 5 दिसम्बर, 2021

प्रतिष्ठान : नेशनल टैलर्स, राजपार्क, जवाहर नगर(जयपुर)
मो. 98291 69391, 7790905548

अनुकृति कुमावत (विन्नी)

जन्म 26 नवंबर 1996- देहावसान 07 दिसम्बर 2021

तुमको न भूल पाएंगे...

श्रद्धान्वत

पिता : राकेश कुमावत, **माता :** मीना कुमावत, **दादा :** सत्यनारायण कुमावत, **दादी :** कांता कुमावत, **भाई :** आदित्य कुमावत, **नाना :** चेतनलाल जी सिरोहिया, **नानी :** पार्वती देवी, **बुआजी-फुफाजी :** रेणु - चेतन जी, रितु - दुष्यंत जी, **भाई-बहन :** तनुज, सारा व स्वरा

एस-3 बी, कबीर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर-302016 मो. 9460061006

श्री कुमावत क्षत्रिय विकास संगठन, मुम्बई

दीवाली स्नेह मिलन समारोह 29 अक्टूबर, 2022 की चित्रावली

Shubh Laxmi Crane & Engineers

(Formally Know as Shri Laxmi Crane Service)

All India Equipments Rental Service Provider

Jai Kishan Kumawat
+91- 9829125428
+91- 9887011175

Shankar Lal Kumawat
+91- 9887227775

Mukesh Kumar Kumawat
+91- 9887337775

H.O.
Shree Heera Bhawan, Dholi Mandi
Chomu-303702 Distt. Jaipur (Rajasthan)

B.O.
Near Patwar Bhawan,Village - Kawas
Distt. Barmer - 344035 (Rajasthan)

shreelaxmicranes@gmail.com
shubhlaxmicrane@gmail.com

www : shrilaxmicrane.com

Graphic By : Art point # 9928064300

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018